हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी ﷺ
की ह़यात पर सब से पहली अरबी किताब, बनामः
ज़मीरुल इन्सान लि इज़्दियादि इश्तियाक़िल मुहि़ब्बीन इला ज़िक्रिर्रहमान
का सब से पहला हिन्दी तर्जमा, बनामः

ह़याते मख़दूमे महाइमी

मुसन्निफ़
मौलाना सय्यिद इब्राहीम बिन सय्यिद मुह़म्मद क़ादिरी हुसैनी मदनी कल्याणी

तर्जमा व तह़क़ीक़
मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी

नाशिर
मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई

हुज़ूर शैख़ुल हिन्द رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ बारहा फ़रमाया करते थे
''मीनारा मस्जिद औलिया अल्लाह की राजधानी है !''

मस्जिदे मीनारा का मन्ज़र है कुछ ऐसा ह़सीं
मुम्बई में कोई मस्जिद इस की हम रुतबा नहीं
शाह अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रत मुज़फ़्फ़र के तुफ़ैल
बन गई है येह सरापा गुलशने ख़ुल्दे बरीं
आलो अस्ह़ाबे नबी के इश्क़ का मरकज़ है येह
औलिया अल्लाह की है राजधानी ये ज़मीं

(अज़ : ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिलाल अशरफ़ी)

सिराजे मीनारा मस्जिद

ह़ज़्रत मौलवी सय्यिद अ़ब्दुल्लाह शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ह़ज़्रत सय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

पंजतने पाक

حضرت سیدتنا فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا

حضرت سیدنا علی مرتضیٰ

محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ عنہ

حضرت سیدنا امام حسن رضی اللہ عنہ

अशरए मुबश्शरा

حضرت سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا علی المرتضیٰ کرم اللہ وجہہ الکریم

حضرت سیدنا سعد بن ابی وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا سعید بن زید رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا ابو عبیدہ بن الجراح رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا طلحہ بن عبید اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا زبیر بن العوام رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت سیدنا عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ

आइम्माए अहले बैत

- حضرت امام علی کرم اللہ وجہہ الکریم
- حضرت امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام زین العابدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام محمد باقر رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام موسیٰ کاظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام علی رضا رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام محمد تقی رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام علی نقی رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام حسن عسکری رضی اللہ تعالیٰ عنہ
- حضرت امام محمد مہدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

आइम्माए अरबआ

- الامام الاعظم ابو حنیفہ النعمان رضی اللہ عنہ
- امام دار الهجرة مالک بن انس رضی اللہ عنہ
- الامام المجدد محمد بن ادریس الشافعی رضی اللہ عنہ
- الامام المبجل احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ

ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ह़यात पर

सब से पहली अ़रबी किताब, बनामः

ज़मीरुल इन्सान लि इज़्दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िक्रिर्रह़मान

का सब से पहला हिन्दी तर्जमा ,बनामः

ह़याते मख़्दूमे महाइमी

-: मुसन्निफ़ :-

ह़ज़रत मौलाना सय्यिद इब्राहीम बिन

सय्यिद मुह़म्मद क़ादिरी हुसैनी मदनी कल्याणी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(मुतवफ़्फ़ा 1292 हिजरी / 1874 ई़सवी)

-: तर्जमा व तह़क़ीक़ :-

मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी

-: नाशिर :-

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई - 400003

© जुम्ला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

सिलसिला ए इशाअ़त नंबर 5

नाम किताब : ज़मीरुल इन्सान लि इज़दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िकर्रिह़मान (तर्जमा बनाम: ज़मीरुल इन्सान)

मुसन्निफ़ : सय्यिद इब्राहीम बिन सय्यिद मुहम्मद क़ादिरी हुसैनी मदनी कल्याणी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 1292 हिजरी / 1874 ईसवी)

तर्जमा-तह़क़ीक़ : मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही, मुंबई

maulaaliresearchcentre13@gmail.com

हिन्दी लिपिक : फ़ारूक़ शाह अ़त्तारी अशरफ़ी, बरोडा (9327776311)

इशाअ़ते अव्वल : 1446 हिजरी / 2025 ईसवी

नाशिर : मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई -3

सफ़्ह़ात : 57

हदिया : दुआ़ ए ख़ैर

मिलने के पते

- मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई-3 — 7021960871
- ख़ानक़ाहे अशरफ़िया, बुर्ज क़ादिरी, मुंबई-8 — 9167334438
- मौलाना मज़हर हुसैन अ़लीमी, मुंबई — 7021333375
- मुतर्जिमे किताब फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही — 7860311024

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

उर्दू से हिन्दी लिपियांतर चार्ट

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
? = ؟	ी = ئ	ु = وُ	आ = آ	य = ی

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

-: नाशिर :-

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई - 400003

E-mail : maulaali.researchcentre@gmail.com

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अर्ज़े नाशिर: 5

कलिमाते तबरीक: 8

मुक़द्दमा:15

मशमूलात	सफ़्हा	मशमूलात	सफ़्हा
इज़हारे तशक्कुर	21		

मुक़द्दमतुल किताब: 22

बाबे अव्वल	23	बाबे सुवम	24
बाबे दुवम	23		

बाबे अव्वल: 25

फ़स्ले अव्वल	25	फ़स्ले सुवम	29
फ़स्ले दुवम	28	वाक़िआ नंबर 1	29
विलादत	28	वाक़िआ नंबर 2	31
वफ़ात	28		

बाबे दुवम: 33

फ़स्ले अव्वल	33	फ़स्ले सुवम	51
वाक़िआ नंबर 3	33	वाक़िआ नंबर 5	48
वाक़िआ नंबर 4	36	वाक़िआ नंबर 6	51
फ़स्ले दुवम	40	दुआ ए मुसन्निफ़	56

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

अ़र्ज़े नाशिर

हमारे अस्लाफ़ की ऐसी हज़ारों किताबें हैं, जिन के मख़्तूते आज भी दुनिया भर की मुख़्तलिफ़ लाइब्रेरियों में मौजूद हैं, जिन पर नए सिरे से काम करने की ज़रूरत है, मगर आज तक उन पर सही़ह़ मानों में काम ना हो सका। एक मुफ़क्किर जब क़ौम की येह बे तवज्जोही देखता है, तो उस का दिल ख़ून के आंसू रोता है और उस की ज़बान से बे साख़्ता निकलता है:

मगर वोह इ़ल्म के मोती, किताबें अपने आबा की
जो देखीं उन को यूरोप में, तो दिल होता है सी पारा (1)

क़ौमे मुस्लिम की इसी बे हिसी को दूर करने के लिए, **मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर** (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) का क़ियाम अ़मल में आया है। हमारा, अव्वलीन मक़सद यही है कि अस्लाफ़ की जिन किताबों पर अब तक काम नहीं हो सका, या जो किताबें अब नायाब हो चुकी हैं, उन पर नए सिरे से काम कर के, उन्हें क़ौमे मुस्लिम के ह़वाले कर दिया जाए।

(1) यानी: टुकड़े टुकड़े

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

हम ने अपने इस मिशन का आग़ाज़, क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की एक नायाब किताब "ग़ायतुल वुजुद बि मारिफ़ति वह़दतिल वुजूद" से कर दिया है। जो मुह़क़्क़िक़ीन की नज़रों से ओझल हो कर मुल्के शाम की एक लाइब्रेरी "मकतबा मुह़म्मद अमीन इ़तक़ी" में मह़फ़ूज़ थी। वहां से "मर्कज़ु जुमुअ़तिल माजिद लिस्सक़ाफ़ति वत्तुरास, दुबई" पहुंची और फिर हमारे हाथ लगी थी।

सरे दस्त आप के हाथों में मौजूद किताब "ज़मीरुल इन्सान लि इज़्दियादि इश्तियाक़िल मुह़िब्बीन इला ज़िकर्रिर्रह़मान" इसी मुबारक सिलसिले की तीसरी कड़ी है। येह पहली मुस्तक़िल किताब है जो अब से तक़रीबन 223 साल पहले ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ह़यात पर लिखी गई थी।

इस किताब के मख़्तूते कैसे ह़ासिल हुवे और इस पर किस त़रह़ काम हुवा है, इस का अंदाज़ा आप मुतर्जिम साह़िब के मुक़द्दमे और किताब के मुत़ाले से बाआसानी लगा सकेंगे।

किताब के मुतर्जिम ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी एक जवां साल आ़लिमे दीन और मुसन्निफ़ व क़लमकार हैं, इन्हें क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से इ़श्क़ की ह़द तक लगाव है और मौलाना मौसूफ़ का मस्कन भी माहिम (Mahim) ही है, इस लिए इन दो निस्बतों की वज्ह से अपने नाम के साथ महाइमी लिखते हैं, मौलाना मौसूफ़ ने इस किताब के तर्जमे, तस्ह़ीह़ व तस्हील में बड़ी अ़र्क़रेज़ी की है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

अल्लाह पाक इन की तमाम ख़िदमाते दीनिया को क़बूल फ़रमाए और किताबे हाज़ा को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमाए। क़ारिईन दुआ़ फ़रमाएं कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त **मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर** (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) को अपने इस अ़ज़ीम मक़सद में कामयाब फ़रमाए। آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इदारा

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई

कलिमाते तबरीक

हज़रत मौलाना फ़ीरोज़ अहमद अ़लीमी मिस्बाही حفظہ اللہ تعالیٰ

(उस्ताद दारुल उ़लूम महबूबे सुब्हानी कुर्ला, मुंबई

ख़तीबो इमाम नूरानी मस्जिद चेंबूर, मुंबई)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"ज़मीरुल इन्सान" पढ़ कर बड़ी शिद्दत से एहसास हुवा कि हमारे यहां विसाल के बाद किसी की ख़ूबियां परखने और बयान करने में बड़ी देर कर दी जाती है। देखिये ना ! हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के अहवाल व कवाइफ़ पर जो किताबचा मंज़रे आ़म पर आया। इस में 387 साल का तवील अ़र्सा लग गया, हालांकि आप जैसी मजमउ़ल बहरैन, मम्बए इ़ल्मो इ़रफ़ान और नाबिग़ा ए रोज़गार शख़्सियत सदियों में भी जलवागर नहीं हो पाती। ख़ैर !

"ज़मीरुल इन्सान लि इज़्दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िकरिर्रहमान" हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की सीरत पर पहली किताब है जिस की अरबी इबारत की तहक़ीक़ और तर्जमा मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही ने की है। मैं पूरे यक़ीन के साथ कह सकता हूं कि इस वक़्त जितनी मालूमात और जितनी किताबें मख़दूमे महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के तअल्लुक़ से मुफ़्ती साहिब के पास मौजूद हैं, उतनी उन के अख़्लाफ़ के पास भी ना होंगी, सिवाए सीना बसीना चलने वाली रिवायतों के। अरबी इबारत पर मुफ़्ती साहिब ने कितनी मेहनत की होगी, इस का अंदाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि कभी कभी एक अरबी मज़मून की इस्लाह में उसे अज़ सरे नौ लिखने से ज़ियादा वक़्त सर्फ़ हो जाता है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

इस किताब का मुआमला कुछ अलग ही है, दो नुस्ख़े सामने हैं: (1) क़लमी (2) मतबूआ। दोनों के बारे में येह गुमान है कि दोनों मोहताजे तस्हीह हैं, ऐसे में अहवत और असह्ह का इन्तिख़ाब बहुत मुश्किल हो जाता है, मुफ़्ती साहिब ऐसे मशाकिल को कब ख़ातिर में लाते, हिम्मत की, मैदान मार लिया।

"ज़मीरुल इन्सान" इसी किताबे मज़कूर का तर्जमा है, तर्जमा ही नहीं बल्कि यूं कहिए कि येह ख़ुद ही मुस्तक़िल किताब है, पढ़ते वक़्त आप को तर्जमे का गुमान तक ना होगा, किसी किताब के तर्जमे में येह ख़ूबी आप को उसी वक़्त मिलेगी जब मुतर्जिम दोनों ज़बानों के उस्लूब से

बख़ूबी वाक़िफ़ हो और दोनों पर उस का मुकम्मल कंट्रोल भी हो, मुफ़्ती साहिब उन्ही कमयाब लोगों में से हैं, जिस की शहादत दोनों किताबों पर दोनों ज़बानों में आप की हाशिया निगारी दे रही है। हाशिये में उन मालूमात और तहक़ीक़ात को जगह दी गई है जो इस किताब के अलावा यकजा कहीं और नहीं मिलेंगी।

मैं ने पूरी किताब का बिल इस्तीआब मुताला कर लिया है, अब आप की बारी है, पढ़ें और फ़ैज़ाने महाइमी से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तनीर हों।

15 जुमादिल आख़िरा 1443 हिजरी

19 जनवरी 2022 ईसवी

बरोज़ बुध

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

मुहम्मद फ़ीरोज़ अलीमी मिस्बाही
ख़ादिमुत्तदरीस दारुल उलूम महबूबे सुब्हानी कुर्ला, मुंबई
ख़तीबो इमाम नूरानी मस्जिद चेंबूर, मुंबई

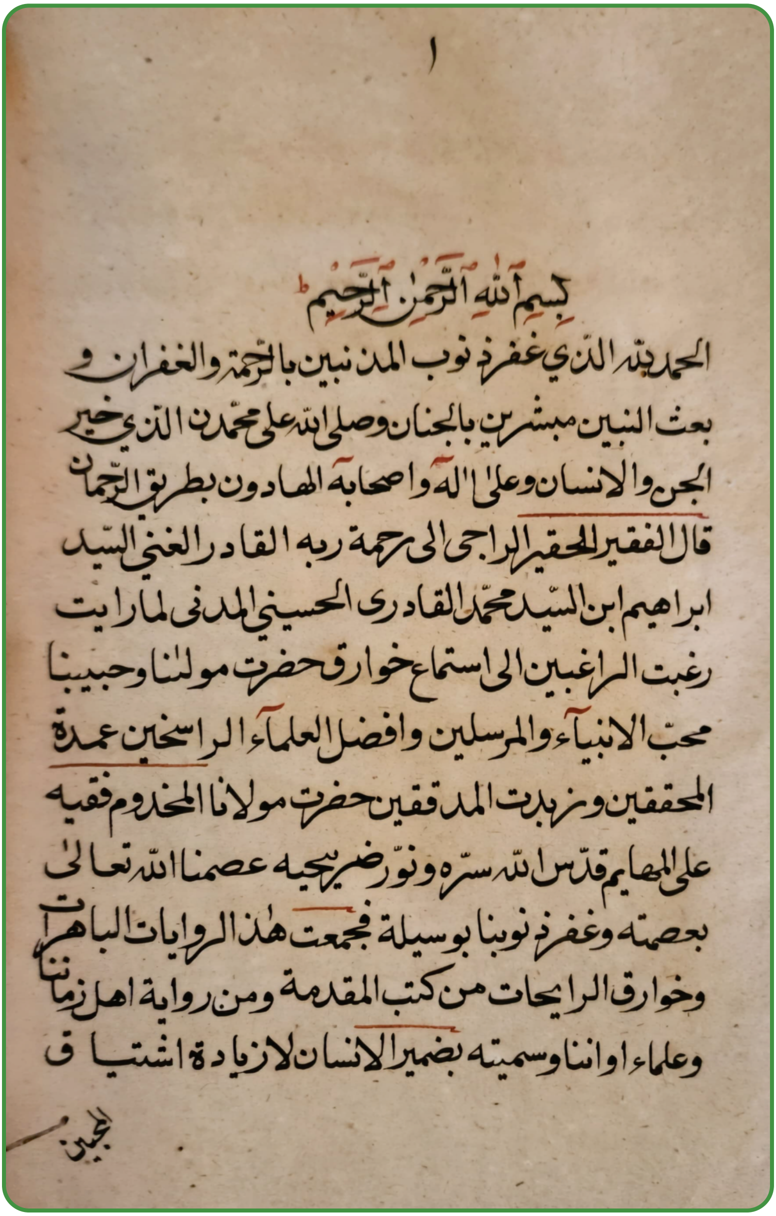
١

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله الذي غفر ذنوب المذنبين بالرحمة والغفران و
بعث النبيين مبشرين بالجنان وصلى الله على محمدن الذي خير
الجن والانسان وعلى آله واصحابه الهادون بطريق الرحمان
قال الفقير الحقير الراجي الى رحمة ربه القادر الغني السيد
ابراهيم ابن السيد محمد القادري الحسيني المدني لما رايت
رغبت الراغبين الى استماع خوارق حضرت مولنا وحبيبنا
محب الانبياء والمرسلين وافضل العلماء الراسخين عمدة
المحققين وزبدت المدققين حضرت مولانا المخدوم فقيه
علي المهايم قدس الله سره ونور ضريحه عصمنا الله تعالى
بعصمته وغفر ذنوبنا بوسيلة فجمعت هذه الروايات الباهرات
وخوارق الرايحات من كتب المقدمة ومن رواية اهل زماننا
وعلماء اواننا وسميته بضمير الانسان لازيادة اشتياق

المحبين

मुंबई यूनिवर्सिटी, चर्चगेट की लाइब्रेरी में मौजूद "ज़मीरुल इन्सान" के क़लमी नुस्ख़े का पहला सफ़हा

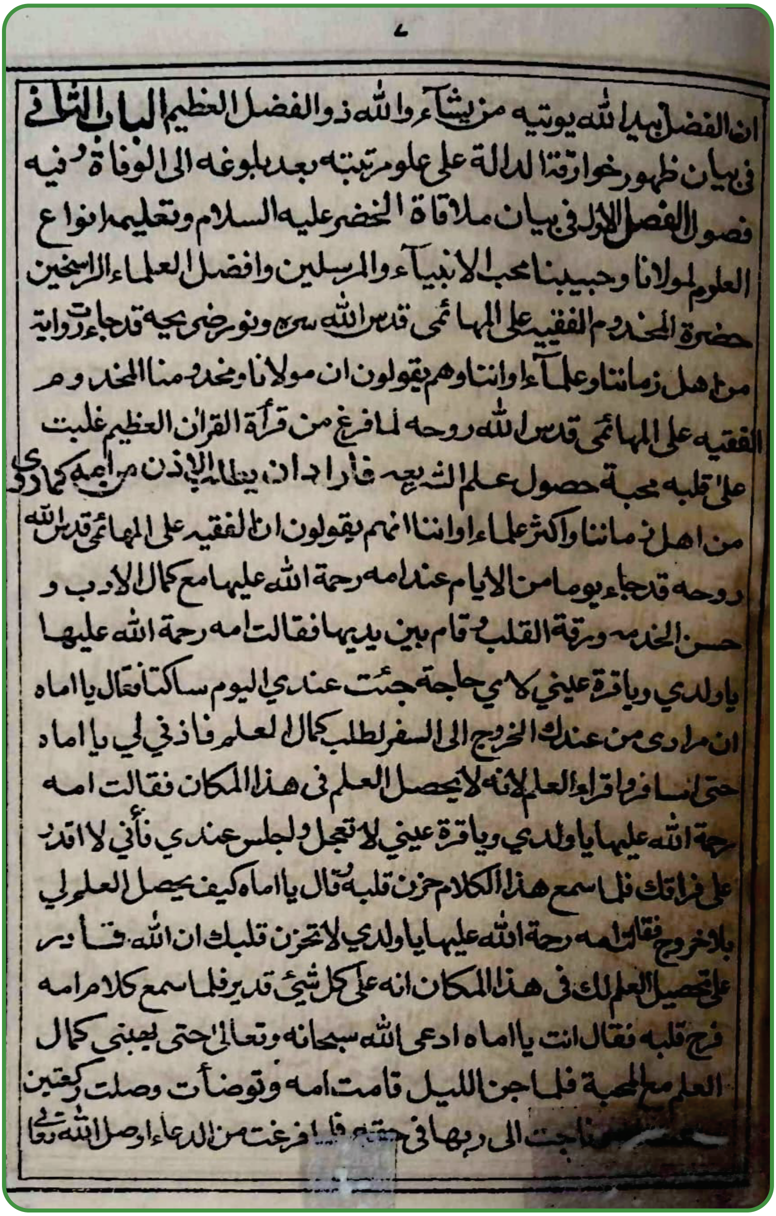

٧

ان الفضل بید الله یوتیه من یشاء والله ذو الفضل العظیم الباب الثانی
فی بیان ظهور خوارقها الدالة علی علو مرتبته بعد بلوغه الی الوفاة وفیه
فصول الفصل الاول فی بیان ملاقاة الخضر علیه السلام وتعلیمه انواع
العلوم لمولانا وحبیبنا محب الانبیاء والمرسلین وافضل العلماء الراسخین
حضرة المخدوم الفقیه علی المهائمی قدس الله سره ونور ضریحه قد جاءت روایة
من اهل زماننا وعلمائنا واتنا وهم یقولون ان مولانا ومخدومنا المخدوم
الفقیه علی المهائمی قدس الله روحه لما فرغ من قرأة القرآن العظیم غلبت
علی قلبه محبة حصول علم الشریعة فاراد ان یطلب الاذن من امه کما روی
من اهل زماننا واکثر علماء اواننا انهم یقولون ان الفقیه علی المهائمی قدس الله
روحه قد جاء یوما من الایام عند امه رحمة الله علیها مع کمال الادب و
حسن الخدمة ورقة القلب وقام بین یدیها فقالت امه رحمة الله علیها
یا ولدي ویا قرة عیني لاي حاجة جئت عندي الیوم ساکتا فقال یا اماه
ان مرادی من عندك الخروج الی السفر لطلب کمال العلم فاذني لي یا اماه
حتی اسافر واقرأ العلم لانه لا یحصل العلم فی هذا المکان فقالت امه
رحمة الله علیها یا ولدي ویا قرة عیني لا تعجل واجلس عندي فاني لا اقدر
علی فراقك فلما سمع هذا الکلام حزن قلبه قال یا اماه کیف یحصل العلم لي
بلا خروج فقالت امه رحمة الله علیها یا ولدي لا تحزن قلبك ان الله قادر
علی تحصیل العلم لك فی هذا المکان انه علی کل شیء قدیر فلما سمع کلام امه
فرح قلبه فقال انت یا اماه ادعی الله سبحانه وتعالی حتی یهبنی کمال
العلم مع المحبة فلما جن اللیل قامت امه وتوضأت وصلت رکعتین
... ناجت الی ربها فی حقه فلما فرغت من الدعاء اوصل الله تعالی

1323 हिजरी / 1905 ईसवी में मतबआ ए शिहाबिया, मुंबई से तबअशुदा
"ज़मीरुल इन्सान" के मतबूआ नुस्ख़े का एक दरमियानी सफ़हा

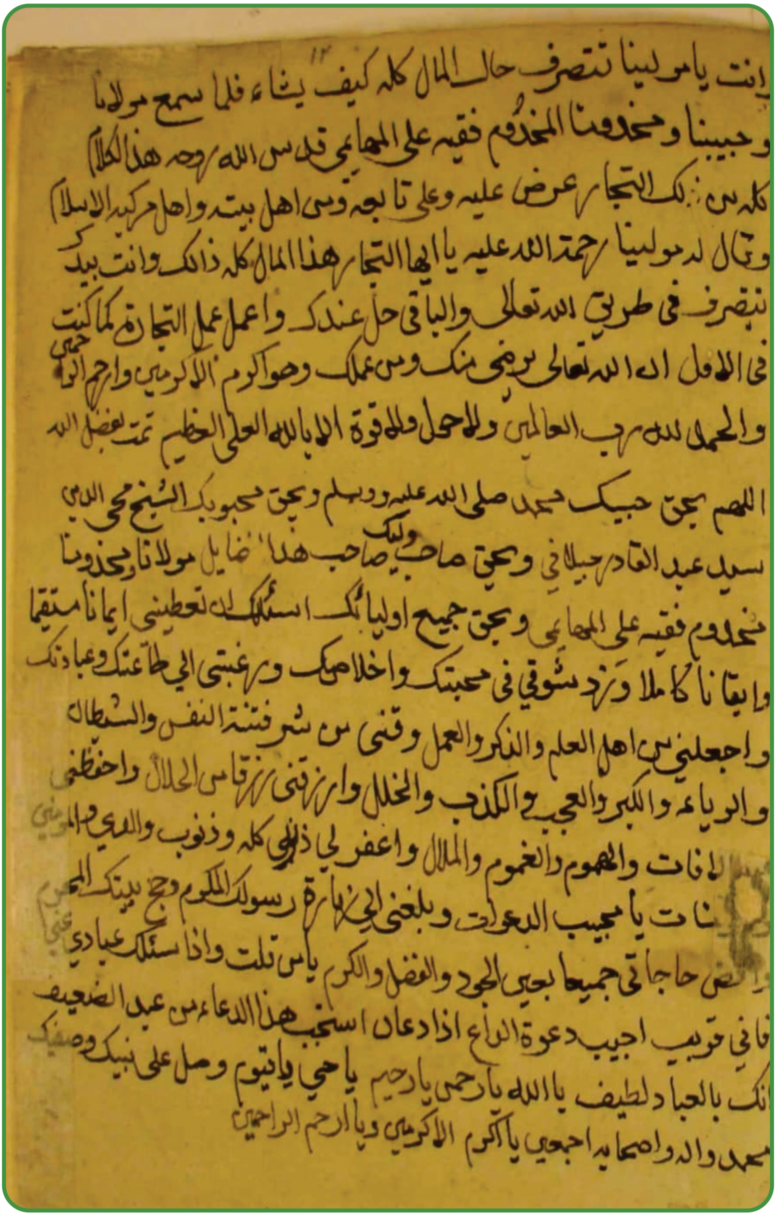
انت یا مولینا تتصرف حال المال کله کیف یشاء فلما سمع مولانا
وحبیبنا ومخدومنا المخدوم فقیه علی المهایمی قدس الله روحه هذا الکلام
کله من ذلک التجار عرض علیه وعلی تابعه ومن اهل بیته واهل مرکب الاسلام
وقال لمولینا رحمة الله علیه یا ایها التجار هذا المال کله ذالک وانت بیدک
تتصرف فی طریق الله تعالی والباقی حل عندک واعمل عمل التجارة کما کنت
فی الاول ان الله تعالی یرضی منک ومن عملک وهو اکرم الاکرمین وارحم الراحمین
والحمد لله رب العالمین ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم تمت بفضل الله
اللهم بحق حبیبک محمد صلی الله علیه وسلم وبحق محبوبک الشیخ محی الدین
سید عبد القادر جیلانی وبحق صاحب ولیک صاحب هذا [illegible] مولانا ومخدومنا
مخدوم فقیه علی المهایمی وبحق جمیع اولیائک اسئلک ان تعطینی ایمانا مستقیما
وایقانا کاملا وزد شوقی فی محبتک واخلاصک ورغبتی الی طاعتک وعبادتک
واجعلنی من اهل العلم والذکر والعمل وقنی من شر فتنة النفس والشیطان
والریاء والکبر والعجب والکذب والخلل وارزقنی رزقا من الحلال واحفظنی
الافات والهموم والغموم والملال واغفر لی ذنوبی کله وذنوب والدی والمؤمنین
نات یا مجیب الدعوات وبلغنی الی زیارة رسولک الکریم وحج بیتک الحرام
قض حاجاتی جمیعا بحق الجود والفضل والکرم یا من قلت واذا سئلک عبادی
فانی قریب اجیب دعوة الداع اذا دعان استجب هذا الدعاء من عبد الضعیف
انک بالعباد لطیف یا الله یا رحمن یا رحیم یا حی یا قیوم وصل علی نبیک وصفیک
محمد واله واصحابه اجمعین یا اکرم الاکرمین ویا ارحم الراحمین

जामेअ़ मस्जिद, मुंबई की लाइब्रेरी में "कुतुब ख़ाना मद्रसा ए मुहम्मदिया"
में मौजूद "ज़मीरुल इन्सान" के क़लमी नुस्ख़े का आख़िरी सफ़्हा

उम्मते मुह़म्मदिया
صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
के जुम्ला औलिया ए किराम
और ड़लमा ए अहले सुन्नत
व जमाअ़त
के नाम

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

मुक़द्दमा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم   حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا

"ज़मीरुल इन्सान" के मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना सय्यिद इब्राहीम बिन सय्यिद मुहम्मद क़ादिरी हुसैनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत कब हुई, तालीमो तरबियत कैसे हुई, बचपन कैसे गुज़रा, जवानी कैसे बीती, सब पर्दए ख़िफ़ा में है, सिर्फ़ इतना मालूम हो सका कि आप तेरहवीं सदी के बुज़ुर्ग थे, सय्यिद ज़ादे थे और सिलसिला ए क़ादिरिया मैं बैअ़त थे, कल्याण के रहने वाले थे, कल्याण ही में रहे और वहीं की मिट्टी को अपनी आख़िरी आरामगाह बनाया। कल्याण वैस्ट (Kalyan West) में स्टेशन से दो किलोमीटर (2km) की दूरी पर पार्सी गली है, वहीं आप का मज़ार है।

हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का चर्चा उस वक़्त भी ख़ूब था, दूर दूर से लोग फैज़ाने मख़दूमी से माला माल होने के लिए महाइम हाज़िर होते और अपनी ख़ाली झोलियाँ भर भर कर ले जाते, उस वक़्त भी क्या अ़वाम क्या ख़वास, सभी हज़रते मख़दूम के हालाते ज़िंदगी से वाक़िफ़ होने के मुश्ताक़ रहते थे, मगर कहीं से कोई किताब या तज़किरा दस्तयाब ना होने पर अफ़सोस करते। ख़ुद मौलाना यूसुफ़ मरघे साहिब जो गर्वनमैंट की जानिब से मुंबई के क़ाज़ी थे हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर कोई किताब लिखना चाहते थे,

मगर बरसों इसी इनतिज़ार में रुके रहे कि कोई मुस्तनद किताब मिलती, जिस से इस्तिफ़ादा किया जाता, फिर जब उन को रिसाला "ज़मीरुल इन्सान" मिला तो उन्हों ने उसी का मन्ज़ूम तर्जमा "ज़ीनतुल मजलिस" के नाम से कर दिया।[1]

मौलाना इब्राहीम क़ादिरी के मिलने जुलने वाले उन से अक्सर इसरार करते रहते कि जब कोई किताब नहीं मिल रही है, तो क्यूं ना आप ही कोई किताब लिख दें, चुनान्चे जब उन का इसरार बहुत ज़ियादा होने लगा तो आप ने "ज़मीरुल इन्सान लि इज़दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िकरिर्रहमान" तस्नीफ़ फ़रमाई। किताब के नाम से ही ज़ाहिर है कि येह अहले इश्तियाक़ के दिलों को सुकून पहुंचाने के लिए लिखी गई थी।

इस किताब में आप ने मुल्ला ख़तीब कल्याणी की किताब से इस्तिफ़ादा फ़रमाया है और उन वाक़िआत से भी किताब को मुज़य्यन किया है जिन की रिवायत उलमा ए किराम और दीनदार हज़रात से नस्लन बादि नस्ललिन चली आ रही थी। इस तरह हज़रते मख़दूम अली महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه पर पहली मरतबा कोई मुस्तक़िल किताब वुजूद में आई। यही इस किताब की सब से बड़ी ख़ूबी है। इस की दूसरी ख़ूबी येह है कि येह किताब आप ने अरबी ज़बान में लिखी थी, जिस से अरबो अजम ने मिल कर इस्तिफ़ादा किया।

बक़ौल मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मरघे (मुतवफ़्फ़ा: 1283 हिजरी / 1866 ईसवी):

"इस किताब की रिवायतें सहीह व मुस्तनद हैं।"[2]

(1) "ज़ीनतुल मजलिस" सिन 1443 हिजरी / 2022 ईसवी में मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी की तहक़ीक़ और तरतीबे जदीद के बाद शाएअ हो चुकी है।

(2) ज़ीनतुल मजलिस, सफ़हा: 9

मगर किताब के उस्लूब का मुताला करने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि येह आप के इबतिदाई ज़माने की तस्नीफ़ होगी। वोह इसलिए कि क़वाइद और ग्रामर की भी बहुत सी ग़लतियां थीं और अक्सर जगह जहां ज़मीर (Pronoun) से काम चल सकता था, दो दो लाईन में हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का नाम लिखा गया है, हत्ताकि हज़रते ख़िज़्र عَلَیۡہِ السَّلَام नौ दस साल के अ़ली को जिस ने अभी उन से पढ़ना शुरूअ़ भी नहीं किया है: "या मख़दूमुल फ़क़ीह अ़ली महाइमी !" कह कर मुख़ातब करते हैं। और उन की वालिदा भी अपने लख़्ते जिगर के लिए जिस की उ़म्र अभी नौ दस साल है: "अल फ़क़ीह अ़ली महाइमी" जैसे कलिमात इस्तिमाल करती हैं।

इस की ताईद इस बात से भी हो जाती है कि "ज़ीनतुल मजलिस" इसी किताब का मन्ज़ूम तर्जमा है और "ज़ीनतुल मजलिस" लिख कर मौलाना यूसुफ़ मरघे साहिब 1222 हिजरी / 1807 ई़सवी में फ़ारिग़ हुवे, इस से पता चलता है कि "ज़मीरुल इन्सान" 1222 हिजरी / 1807 ई़सवी या उस से पहले की तस्नीफ़ होगी। मौलाना इब्राहीम मदनी का इन्तिक़ाल 1292 हिजरी /1874 ई़सवी में हुवा, इसलिए कुछ अ़जब नहीं कि 1222 हिजरी / 1807 ई़सवी में आप की उ़म्र 20 साल के आस पास रही हो और येह भी मुमकिन है कि वोह ज़माना, आप के त़ालिबे इ़ल्मी का ज़माना हो।

बहरे ह़ाल इस किताब की अहमिय्यत व इफ़ादिय्यत से इनकार नहीं किया जा सकता और क्यूं ना हो कि येह ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ह़यात पर पहली मुस्तक़िल तस्नीफ़ है और बाद में आने वाले सभी मुअर्रिख़ीन व मुह़क़्क़िक़ीन के लिए मआख़िज़ की ह़ैसिय्यत रखती है।

इस किताब का एक क़लमी नुस्ख़ा मुंबई यूनीवर्सिटी, चर्चगेट (Mumbai University Churchgate) की लाइब्रेरी (Library) में मौजूद है।

वहां मौजूद कैटलोग बनाम:

"A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

THE ARABIC, PERSIAN & URDU MANUSCRIPTS"

के नंबर शुमार 56 सफ़्हा नंबर 181 पर इस की तफ़सील मौजूद है, जिस की मदद से आप येह मख़्तूता हासिल कर सकते हैं। येह मख़्तूता कुल 23 सफ़्हात पर मुश्तमिल है। हेडिंग्ज़ (Headings) सुर्ख़ रौशनाई से लिखी गई हैं।

दूसरा क़लमी नुस्ख़ा जामेअ़ मस्जिद मुंबई की लाइब्रेरी "कुतुब ख़ाना मदर्सा ए मुहम्मदिया" मैं मौजूद है। किताब का नंबर 355 AM है। AM से मुराद अ़रबी मख़्तूता है। येह मख़्तूता कुल 20 सफ़्हात पर मुश्तमिल है, पहले वाले मख़्तूते से ज़ियादा सहीह और क़दीम है, किताब के अख़ीर में मुसन्निफ़ की दुआ़एं भी लिखी हुई हैं।

2004 में "ज़मीरुल इन्सान" शाएअ़ हुई थी। जिस की तह़क़ीक़ मुफ़्ती इ़स्मत बूबेरे मिस्बाही ने की थी और 2011 ईसवी में अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण से अ़रबी इ़बारत और उर्दू तर्जमा दोनों एक साथ शाएअ़ हुवा था, अ़रबी इ़बारत की तह़क़ीक़ मुफ़्ती इ़स्मत बूबेरे मिस्बाही ने ही की थी और उर्दू तर्जमा दारुल उ़लूम मह़बूबे सुब्ह़ानी के क़दीम फ़ाज़िल, मुफ़्ती अ़ब्दुल वली सुब्ह़ानी ने किया था।

मज़कूरा दोनों मत़बूआ़ नुस्ख़ों की तह़क़ीक़, इन्ही क़लमी नुस्ख़ों को सामने रख कर की गई थी और तर्जमे में भी इ़बारत की पूरी पूरी रिआ़यत बरती गई थी। "मरातिबे वुजूद"[1] की तह़क़ीक़ के दौरान जामेअ़ मस्जिद मुंबई की लाइब्रेरी "कुतुब ख़ाना मदर्सा ए मुहम्मदिया" में मुझे "ज़मीरुल इन्सान" का एक क़दीम मत़बूआ़ नुस्ख़ा मिल गया। فَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ

(1) ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की किताब "इराअतुद्दक़ाइक़ फ़ी शर्ह़ि मिरआतिल ह़क़ाइक़" का उर्दू तर्जमा, जो मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी की तह़क़ीक़ और तर्जमे के बाद 2019 ईसवी में शाएअ़ हुवा।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

येह नुस्ख़ा 1323 हिजरी / 1905 ईसवी में यानी मुसन्निफ़ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की वफ़ात के 31 साल बाद, मंज़रे आम पर आया था, जिस की तबाअत "मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल क़ादिर जीते कर" ने मतबआ ए शिहाबिया, मुंबई से कराई थी। क़लमी नुस्ख़े में मौजूद क़वाइद और कातिब की गलतियां काफ़ी हद तक इस मतबूआ नुस्ख़े में दुरुस्त कर दी गई थीं। येह नुस्ख़ा कुल 16 सफ़हात पर मुश्तमिल है।

मज़कूरा पांचों नुस्ख़े अब नायाब हो चुके हैं। इस लिए उस्तादे मोहतरम हज़रत अब्दुल ग़फ़्फ़ार क़ादिरी, मौलाना मज़हर हुसैन अलीमी और हाफ़िज़ मुहम्मद बिलाल अशरफ़ी, सभी का येह ख़याल था कि मतबआ ए शिहाबिया वाला नुस्ख़ा मिल जाने के बाद अब मुनासिब मालूम होता है कि एक मरतबा फिर अरबी इबारत की तहक़ीक़ कर ली जाए और दोबारा फिर उस का आसान, आम फ़हम और सलीस उर्दू तर्जमा कर के क़ौम के हवाले कर दिया जाए।

लिहाज़ा, मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी बग़ैर किसी ताख़ीर के, इस काम में जुट गया।

- अरबी मतन की तहक़ीक़ में हम ने क़लमी नुस्ख़े की सहीह इबारतों को बरक़रार रखा है कि अस्ल यही है, बाक़ी मतबआ ए शिहाबिया की इबारतों को जगह दी है कि सहीह यही है, ताहम कहीं कहीं मतबूआ नुस्ख़े में भी गलतियां रह गई थीं, उन्हें भी दुरुस्त कर लिया गया है।
- दो मुक़ाम ऐसे थे कि मआनी के एतिबार से दोनों सहीह थे, लेकिन दोनों का मफ़हूम अलग था, दोनों में से किस का इन्तिख़ाब किया जाए येह कन्फ़र्म (Confirm) नहीं हो पा रहा था, फिर "ज़मीरुल इन्सान" का मन्ज़ूम तर्जमा "ज़ीनतुल मजलिस" हमारे हाथ लगा और इस से इस बात की तहक़ीक़ हो गई कि क़लमी नुस्ख़े की इबारत ही ज़ियादा मुनासिब है, इस

लिए इन दोनों मुक़ाम पर क़लमी नुस्ख़े की इ़बारतों का इन्तिख़ाब हुवा।

➢ क़ुरआनी आयात को इस त़रह ﴿ ﴾ के मुनक़्क़श (Bracket) में घेरा गया है।

➢ क़ुरआनी आयात का फ़ोन्ट 1 MUHAMMADI QURANIC रखा गया है, जबकि दीगर अ़रबी इ़बारत का फ़ोन्ट ASAD रखा गया है। ताकि इमतियाज़ बर क़रार रहे।

➢ उर्दू तर्जमे में जो इ़बारत इस त़रह () के ब्रैकट में है, उन का इज़ाफ़ा हमारी त़रफ़ से मफ़हूम की मज़ीद वज़ाह़त करने के लिए किया गया है।

➢ क़ारिईन की सहूलत के लिए हम ने मुनासिब ह़ाशिये भी लगा दिए हैं।

➢ हर वाक़िए़ की शुरूआ़त नए हेडिंग (Heading) से की गई है।

➢ मुसन्निफ़ ने ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की जिन किताबों का ज़िक्र फ़रमाया है, उन का, और उन के अ़लावा आप की दीगर किताबों का मुख़्तसर तआ़रुफ़, हम ने ह़ाशिये में कर दिया है।

➢ उर्दू तर्जमे में हम ने लफ़्ज़ों की पाबन्दी नहीं की है, तर्जमा मफ़हूमी है। ताकि उर्दू अपना हुस्न बर क़रार रखे। हमें यक़ीन है कि अहले इ़ल्म जब अ़रबी इ़बारत व तर्जमे का मुवाज़ना करेंगे, तो ख़ुश होंगे और हमारी ताईद फ़रमाएंगे।

➢ तर्जमे में जहां जहां अ़रबी इ़बारत आई है, उस पर एराब लगाया गया है, ताकि क़ारी किसी भी क़िस्म की उलझन का शिकार ना हो।

➢ अब हमें पूरी त़रह इत़मीनान ह़ासिल है कि क़ौम के हाथों में मौजूद "ज़मीरुल इन्सान" का येह नुस्ख़ा सह़ीह़ तरीन है। فَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ

इज़हारे तशक्कुर

मैं अपने वालिदैने करीमैन, जुम्ला असातिज़ा ए किराम ख़ुसूसन हज़रत मौलाना नूरुल क़मर (इब्ने रक़म) मिस्बाही اَدَامَ اللّٰہُ تَعَالٰی ظِلَّھُمْ का तहे दिल से शुक्र गुज़ार हूं, जिन की दुआएं और रहनुमाइयां, क़दम क़दम पर मेरे शामिले हाल रहीं।

➤ हज़रत मौलाना मज़हर हुसैन अलीमी, हाफ़िज़ मुहम्मद बिलाल अशरफ़ी, और मौलाना फ़ीरोज़ अहमद अलीमी मिस्बाही का भी बेहद ममनून हूं कि आप हज़रात ने किताब का बिल इसतीआब मुताला फ़रमा कर अपने मुफ़ीद मशवरों और इस्लाहात से नवाज़ा।

➤ मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी, मौला अली रिसर्च सेन्टर, ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद, मुंबई के सभी ट्रस्टियान, ख़ास तौर पर अल्हाज अब्दुल वह्हाब लतीफ़ अशरफ़ी साहिब का भी तहे दिल से शुक्र गुज़ार है कि जिन्हों ने मौला अली रिसर्च सेन्टर क़ाइम कर के अहम दीनी व मज़हबी किताबों की इशाअत का बीड़ा उठाया है, अल्लाह तआला उन के हौसलों को सलामत रखे।

अल्लाह तआला हम सभी से राज़ी हो, हम सब को ख़ुलूस और लिल्लाहियत से काम करने की तौफ़ीक़ बख़्शे, सब का ख़ातिमा ईमान

آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही
उस्ताद: मर्कज़ी जामिअतुल मदीना, मुंबई
साकिन: माहिम ईस्ट, मुंबई

बरोज़ मंगल
6 जुमादल ऊला 1445 हिजरी
21 नवम्बर 2023 ईसवी

मुक़द्दमतुल किताब

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए जो अपने रह़मो करम से गुनाहगारों के गुनाहों को बख़्शने वाला है, जिस ने अम्बिया को जन्नतों का मुबश्शिर[(1)] बना कर भेजा, दुरूदो सलाम हो सक़लैन[(2)] में सब से बेहतर ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप के हिदायत याफ़्ता आलो अस्ह़ाब पर।

फ़क़ीर ह़क़ीर सय्यिद इब्राहीम बिन सय्यिद मुह़म्मद क़ादिरी ह़ुसैनी मदनी रब्बे क़दीर की रह़मत से पुर उम्मीद हो कर अ़र्ज़ गुज़ार है:

चूंकि लोग मुह़िब्बुल अम्बिया वल मुरसलीन अफ़ज़लुल उ़लमा, उ़मदतुल मुह़क़्क़िक़ीन, ज़ुबदतुल मुदक़्क़िक़ीन ह़ज़रत मौलाना मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه की करामात के दिल दादा व मुश्ताक़ हैं, इस लिए मैं ने साबिक़ा किताबों और हमअ़स्र उ़लमा व

(1) ख़ुश-ख़बरी सुनाने वाला।
(2) इन्सान और जिन्नात।

अहले ज़माना की रिवायतों से माख़ूज़ दिलकश वाक़िआत व करामात को किताबी शक्ल दे दी है।

मैं ने इस किताब का नाम **"ज़मीरुल इन्सान लि इज़दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िकरिर्रहमान"** रखा है।

येह रिसाला तीन अबवाब पर मुश्तमिल है:

बाबे अव्वल

इस बाब में आप के नसब और आप की तारीख़े विलादत व वफ़ात और उन करामात का बयान है, जिन का ज़ुहूर आप के बालिग़ होने से पहले हुवा।

इस बाब में तीन फ़स्लें हैं।

बाबे दुवम

इस बाब में इस की पूरी तफ़सील है कि किस तरह हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से आप की मुलाक़ात हुई और उन के ज़रीए किस तरह आप को इल्मे लदुन्नी[1] हासिल हुवा, इस बाब में आप की उन तसानीफ़ का ज़िक्र है जो मुख़्तलिफ़ उलूमो फ़ुनून में आप ने यादगार छोड़ी हैं और उन करामात का भी तज़किरा है जिन का ज़ुहूर आप के बालिग़ होने के बाद से वफ़ात तक हुवा।

इन करामात से आप के अज़ीमुल मर्तबत वली ए कामिल होने का पता चलता है।

(1) वोह इल्म जो महज़ फ़ैज़े इलाही और इलक़ा ए रब्बानी से हासिल हुवा हो और इस में अपनी महनत या किसी उस्ताद की तालीम का दख़्ल ना हो।

येह बाब भी तीन फ़स्लों पर मुश्तमिल है।

बाबे सुवम[1]

इस बाब में उन करामात का ज़िक्र है जिन का ज़ुहूर आप की वफ़ात के बाद हुवा।

दुआ है कि अल्लाह तआला आप के मर्क़द को मुनव्वर करे और आप के तक़्वा और परहेज़गारी के सबब हमें महफ़ूज़ रखे और आप के वसीले से हमारे गुनाहों को बख़्श दे।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(1) ज़मीरुल इन्सान के सभी नुस्ख़ों में सिर्फ़ शुरूअ के दो अबवाब ही मिलते हैं, हो सकता है कि मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का पहले इरादा यही हो कि बादे वफ़ात ज़ाहिर होने वाली करामात को भी यकजा करें, लेकिन बाद में किसी सबब से अपना येह इरादा मुल्तवी कर दिया हो। येह भी हो सकता है कि तीसरा बाब क़ातिबों के नक़्ल करने से रह गया हो और अगर ऐसा हुवा होगा, तो यक़ीनन येह बहुत बड़ा नुक़्सान हुवा। **महाइमी**

बाबे अव्वल

येह बाब आप के नसब, आप की तारीख़े विलादत व वफ़ात और उन करामात के बयान में है जिन का ज़ुहूर आप के बालिग़ होने से पहले हुवा।

इस बाब में तीन फ़स्लें है:

फ़स्ले अव्वल

नसब: हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के नसब के मुतअ़ल्लिक़ दो क़ौल हैं: (1)

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(1) आप के नसब नामे के सिलसिले में अलग अलग किताबों में अलग अलग क़ौल मिलता है, कुल चार अक़्वाल मिलते हैं जिन्हें हमने नंबर वार ज़ैल में दर्ज किया है और तरजीही पहलू निकालने की कोशिश की है, जिस की तफ़्सील कुछ इस तरह है....

ज़मीरुल इन्सान में येह दो क़ौल हैं:

पहला क़ौल: अ़ली बिन अह़मद बिन अ़ली बिन अह़मद (मशहूर बिह इब्ने बिन्ते हुसैन नाख़ुदा नैकूलिया)।

दूसरा क़ौल: अ़ली बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माईल बिन मुहम्मद बिन अह़मद।

किताब "शमाइलुल अतक़िया" से दूसरे क़ौल की तसदीक़ होती है। इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ मुसन्निफ़ मौलाना इब्राहीम मदनी का कहना है कि येह ख़ुद हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के दस्ते मुबारक से लिखी हुई है। मौलाना इब्राहीम मदनी ने भी इसी दूसरे क़ौल को राजेअ़ क़रार दिया है।

मगर हमारे पास जो सब से क़दीम मआख़िज़ है, वोह तफ़्सीरे महाइमी का एक क़दीम मख़तूता है, जिस की किताबत 968 हिजरी में हुई है, कातिब ने "तर्जमए मुसन्निफ़" के तहत हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी का मुख़्तसर तज़किरा अ़रबी ज़बान में किया है, इस का स्केन (Scan) हमारे पास मौजूद है, इस में आप के नसब के मुतअ़ल्लिक़ येह क़ौल नक़्ल है.....

पहला क़ौल मौलाना मुल्ला मुहम्मद ख़तीब कल्याणी की किताब से मन्क़ूल है, जो येह है : "मख़दूम अ़ली बिन अह़मद बिन अ़ली बिन अह़मद मशहूर बिह इब्ने बिन्ते हुसैन नाख़ुदा नैकूलिया।"

(बक़िया पिछले सफ़्हे का हाशिया)

तीसरा क़ौल: अ़ली प्रो बिन अह़मद परो अल मुश्तहर बिन्ते हुसैन नाख़ुदा नैकूलिया।

इस के बाद दूसरा सब से क़दीम नुस्ख़ा, जिस में आप के नसब का ज़िक्र मिलता है, वोह है "गुलज़ारे अबरार", इस के मुसन्निफ़ मौलाना मुहम्मद ह़सन ग़ोसी शत़ारी हैं। "गुलज़ारे अबरार" की तालीफ़ 998 हिजरी / 1590 ईसवी में शुरूअ़ हुई और तकमील 1020 हिजरी / 1611 ईसवी से 1022 हिजरी / 1613 ईसवी के दरमियान हुई थी।

शत़ारी साहिब ने आप के नसब के मुतअ़ल्लिक़ लिखा है:

پیرو دیہی است از مہائم کہ بندر زیر بادشاہتِ گجرات است، نام پدر اواحمد مہائمی است۔

तर्जमा: शैख़ अ़ली प्रो के पिदरे बुज़ुर्गवार का नाम "अह़मद " है। प्रो बंदरगाहे महाइमी का एक गांव है और महाइम, गुजरात (Gujarat) के बादशाहों के मा तह़त है। (चमने सुवम, तज़किरा ए हिशतुम, अज़: मख़तूता: किताबख़ाना नवाब सद्र यार जंग बहादुर मौलाना ह़बीबुर्रह़मान ख़ान शरवानी)

तीसरा मआख़िज़ "आईने अकबरी" है, येह बादशाह जलालुद्दीन अकबर के वज़ीर शैख़ अबुल फ़ज़्ल की तस्नीफ़ है, अबुल फ़ज़्ल का इंतिक़ाल 1011 हिजरी में हुवा, उन्हों ने ह़ज़रते मख़दूम का मुख़्तसर सा ज़िक्र किया है, जिस में आप के नसब के मुतअ़ल्लिक़ येह क़ौल मिलता है:

शैख़ अ़ली प्रो बिन मौलाना अह़मद महाइमी। (आईने अकबरी, जिल्दः 3, सफ़्हाः 174, मत़बूआ़: नवल किशोर)

भोपाल के नवाब जनाब जमालुद्दीन साहिब ने 1295 हिजरी / 1878 में बोलाक़, मिस्र से दो जिल्दों में तफ़्सीरे महाइमी की इशाअ़त की थी, उस की जिल्द दुवम सफ़्हा नंबर 422 पर येह क़ौल मिलता है।

चौथा क़ौल: अ़ली बिन अह़मद बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माईल। (तफ़्सीरे तबसीरुर्रह़मान, अज़: मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी, जिल्दः 2, स 422, बोलाक़, मिस्र)

तारीख़े कल्याण के मुसन्निफ़ मौलाना इ़स्मत बूबेरे मिस्बाह़ी के बक़ौल "इब्राहीम" आप के परदादा होते हैं जिस से चौथे क़ौल की तसदीक़ होती है। (तारीख़े कल्याण, स 8, अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण)

मेरे नज़दीक चौथा क़ौल ही ज़ियादा मोतबर और राजेह क़ौल है।

चौथे क़ौल के राजेह़ होने की वज्ह

पहला क़ौल इस लिए राजेह नहीं है क्यूंकि इस में इब्राहीम ह़ज़रते मख़दूम के पर दादा नहीं होते।

और दूसरा क़ौल इस तरतीब से है:

"अ़ली बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माई़ल मुसन्निफ़े तफ़्सीरे इलहामुर्रह़मान व मुतम्मिमे तफ़्सीरे तबसीरुर्रह़मान बिन मुह़म्मद बिन अह़मद मुलक़्क़ब बिह कौदर, जौहर के वज़्न पर है।"

(बक़िया पिछले सफ़्ह़े का ह़ाशिया)

मज़ीद येह कि मौलाना इब्राहीम मदनी ने पहला क़ौल मुल्ला ख़तीब कल्याणी की किताब से नक़्ल फ़रमाया है और कुछ बई़द नहीं कि मुल्ला ख़तीब कल्याणी ने येह पहला क़ौल "तफ़्सीरे महाइमी" के मज़कूरा क़लमी नुस्ख़े से ह़ासिल किया हो, और कातिब की ग़लती से "अ़ली बिन अह़मद" दो मरतबा लिख दिया गया हो।

दूसरा क़ौल इस लिए मरजूअ़ है; क्यूंकि इस क़ौल के एतिबार से "अह़मद" ह़ज़रते मख़दूम के वालिद नहीं होते, जबकि जुमला सीरत निगारों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि आप के वालिद का नाम "अह़मद" है इस लिए हो सकता है कि कातिब से "अह़मद" लिखने से रह गया हो।

तीसरे और चौथे क़ौल में कोई तज़ाद नहीं।

जब कि चौथे क़ौल में "अह़मद" आप के वालिद और "इब्राहीम" आप के परदादा होते हैं, जिस की तसदीक़ तफ़्सीरे महाइमी और तारीख़े कल्याण से हो जाती है।

फिर येह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि कोकनी ह़ज़रात का पहले से ही दस्तूर रहा है कि हर ख़ानदान का एक ज़ाती क़ब्रिस्तान हुवा करता था, जहां उसी ख़ानदान के अफ़राद को दफ़्न किया जाता था। कल्याण (Kalyan) में येह दस्तूर आज भी बरक़रार है। कल्याण रेलवे स्टेशन से डेढ़ किलो मीटर (1.5 km) की दूरी पर "गिफ़ोर्डान चौक" के पास ह़ज़रते शैख़ निज़ामुद्दीन ख़ामोश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ार है, इस के दाहिनी जानिब ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी का आबाई क़ब्रिस्तान आज भी मौजूद है। वहां ह़ज़रते मौलाना अह़मद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे मुबारक भी है और बरसों से यही मशहूर भी है कि येह ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद साह़िब का मज़ार है, साथ ही वहां और भी कई क़ब्रें हैं, उन में से तीन क़ब्रों के कतबे पर बित्तरतीब ह़सन, इब्राहीम और इस्माई़ल लिखा हुवा है। इसलिए मुनासिब यही है कि अब ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नसब यूं लिखा जाए:

अ़ली बिन अह़मद बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माई़ल।

इस से चौथे क़ौल की तसदीक़ भी हो जाती है और सारे अक़्वाल में ततबीक़ भी।

और अगर दूसरे क़ौल को सह़ीह़ तरीन क़ौल मान लें कि येह ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथों लिखा हुवा है और साथ ही येह भी मान लिया जाए कि इस क़ौल में "अह़मद" लिखने से रह गया है, तो ह़ज़रते मख़दूम का नसब इस त़रह़ लिखा जा सकता है:

अ़ली बिन अह़मद बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माई़ल बिन मुह़म्मद बिन अह़मद।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

मैं ने येह दूसरा क़ौल ह़ज़रत फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के दस्ते मुबारक से लिखी हुई किताब "शमाइलुल अतक़िया" के अख़ीर में पाया है।

फ़स्ले दुवम

विलादत

मौलाना मुहम्मद ख़तीब कल्याणी की किताब के मुताबिक़ ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 776 हिजरी / 1374 ईसवी में हुई।[(1)]

वफ़ात

जुमुआ की शब इ़शा के वक़्त 8 जुमादल आख़िरा 835 हिजरी / मुताबिक़ 1432 ईसवी को 59 साल की उ़म्र में आप का इन्तिक़ाल हुवा। (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡن) और जुमुआ को दिन चढ़े महाइम में, अपने रिश्तेदारों

MAKHDOOM ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(1) ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ 776 हिजरी / 1374 ईसवी में पैदा हुवे और 835 हिजरी / 1432 ईसवी में वफ़ात पाई, गोया आप ने 24 साल आठवीं सदी हिजरी के पाए, 35 साल नववीं सदी हिजरी के, इस त़रह़ कुल उनसठ (59) साल आप ने अपने इ़ल्म व दानिश और सुलूक व मारिफ़त से इस जहांने फ़ानी को ज़ीनत बख़्शी। उस अ़हद में जहां मुसलमान सलात़ीन के जहांबानी की धमक मह़सूस की जाती थी वहीं इस्लामी उ़लूमो फ़ुनून की तरक़्क़ी की राहें भी उस्तुवार थीं, उस वक़्त देहली के तख़्त पर ग़ियासुद्दीन तुग़लक़ का भतीजा फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ हुकूमत कर रहा था, उस का ज़माना तारीख़ में अमनो अमान का ज़माना कहा जाता है, साथ ही इस बात के भी शवाहिद मिलते हैं कि उस दौर में इ़ल्म व अदब के फ़रोग़ और शरीअ़ते इस्लामी की तरवीजो इशाअ़त पर बड़ी ख़ुशगवार तवज्जोह दी गई, दक्कन और गुजरात के अ़लाक़ों में भी उ़लूमो फ़ुनून के गुलगुले थे, इस अ़हदे ज़रीं में ह़ज़रते अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इ़ल्मी और रुहानी एतिबार से हर आ़मो ख़ास के मर्कज़े तवज्जोह थे, ख़ल्क़े ख़ुदा, इ़ल्मी और रुहानी प्यास बुझाने के लिए आप की तरफ़ रुख़ करती थी जिस की वज्ह से "माहिम" (Mahim) शराबे मारिफ़त का मयख़ाना और इ़ल्म व आगही का गहवारा बन गया। (माख़ूज़ अज़ तक़दीमः सवानेह़े मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी, सफ़ह़ाः 10-11)

के क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हुवे । इसी क़ब्रिस्तान में आप की वालिदा ए मोह़तरमा का भी मज़ार है।[1]

फ़स्ले सुवम

उन करामात के ज़िक्र में जिन का ज़ुहूर आप के बालिग़ होने से पहले हुवा।

वाक़िआ नंबर 1

हमारे मुआ़सिरीन से येह रिवायत मन्क़ूल है:

आप की वालिदा ए मोह़तरमा बड़ी आ़बिदा, ज़ाहिदा, मुत्तक़िया, मुस्तजाबुद्दावात[2] और एक रब्बानी आ़लिमा थीं और ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه बचपन ही से ग़ायत दर्जा बाअदब थे, आप के बड़े बूढ़ों के नज़दीक आप की शख़्सियत एक मोअद्दब व फ़रमांबरदार बच्चे की थी, इसी वज्ह से वोह आप को क़द्र की निगाह से देखते थे।

मुआ़सिरीन ही से मन्क़ूल है:

ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه अपनी वालिदा ए मोह़तरमा का ग़ायत दर्जा अदबो एह़तिराम करते थे, एक रात ऐसा हुवा कि आप की वालिदा ए मोह़तरमा तख़्त पर आराम कर रही थीं, आप ने अपने लख़्ते

(1) "महाइम" (Mahim) आप का ननिहाल था, आप के नाना एक मालदार ताजिर थे। ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه के सिग़र सिन्नी ही में आप के वालिद मौलाना अह़मद का इंतिक़ाल हो गया था, इस लिए आप की वालिदा आप को ले कर अपने मैके "महाइम" चली आई थीं, जिस जगह आप मदफ़ून हैं, येह आप का ख़ानदानी क़ब्रिस्तान था। ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه के इंतिक़ाल के ठीक 40 दिन बाद आप की वालिद ए मोह़तरमा का इंतिक़ाल हुवा, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡهِ رٰجِعُوۡنَ वोह भी, इसी क़ब्रिस्तान में, आप के पहलू में मदफ़ून हुईं। महाइमी

(2) **यानी:** वोह ज़ात जिस की दुआ़ कभी रद्द नहीं होती

जिगर (ह़ज़रते फ़क़ीह) से पीने को पानी मांगा, आप उठे और पानी का पियाला ले कर ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, देखा कि वालिदा ए मोह़तरमा की आँख लग गई है, इस लिए रात भर पियाला लिए खड़े रह गए कि कहीं वालिदा ए मोह़तरमा पानी ना मांग लें, जब सह़री के वक़्त वालिदा ए माजिदा की आँख खुली तो देखा कि ह़ज़रते फ़क़ीह पानी का पियाला लिए आप के सामने खड़े हैं, आप ने पूछा: "मेरे लाल, मेरी आँखों की ठंडक ! तुम येह पियाला लिए क्यूं और कब से खड़े हो ?"

अ़र्ज़ की: "अम्मी जान ! आप ने रात मुझ से पीने को पानी मांगा था ना, तब से। अम्मी, जब मैं पानी ले कर आया तो आप को सोता पाया, इस लिए मैं ने आप को बेदार नहीं किया और अब तक आप की ख़िदमत में खड़ा हूं कि कहीं आप पानी ना मांग लें।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

येह बातें सुन कर आप की वालिदा ने मह़सूस किया कि उन का बच्चा बहुत बाअदब है, बच्चे की इस मह़ब्बत व ख़िदमत पर दिल ख़ुशी से झूम उठा, आप तख़्त से उठीं, पानी का पियाला लिया, फिर वुज़ू कर के दो रकअ़त नमाज़ अदा की और अपने बच्चे के ह़क़ में दुआ़ करने लगीं, अपने रब से मुनाजात करते हुवे अ़र्ज़ की:

"ख़ुदाया ! ऐ दुआ़ओं को क़बूल करने वाले ! तू जानता है कि मेरी आंखों की ठंडक, मेरे बेटे ने अपनी ख़िदमत और कमाले अदब से मुझ को ख़ुश कर दिया है, मैं दिल से इस से राज़ी हूं, ऐ मेरे रब ! तू भी इस से राज़ी हो जा। इलाहल आ़लमीन ! मेरे बेटे को विलायते अ़ज़ीमा अ़ता कर दे, ऐ अव्वलीनो आख़िरीन के रब इसे सोह़बते सह़ीह़ा कामिला अ़ता कर दे।"

जूं ही आप दुआ़ से फ़ारिग़ हुईं, रब तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ऐसी विलायते अ़ज़ीमा अ़ता फ़रमाई कि आप अपने अहले ज़माना पर फ़ाइक़ व बरतर हो गए।

वाक़िआ़ नंबर 2

मैं ने क़ुदमा[1] से सुना है: ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास एक बकरी थी जिस के साथ आप बचपन में खेला करते थे, एक दफ़्अ़ा ऐसा हुवा कि आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने उस्ताद साह़िब के पास तशरीफ़ ले गए और उधर आप की बकरी मर गई, वालिदा ने ख़ादिमा को हुक्म दिया: "बकरी तो मर गई है, ऐसा करो, तुम इसे ले जा कर समुन्दर के कनारे डाल आओ।"

ख़ादिमा ने हुक्म की तामील की, कुछ देर बाद ह़ज़रत फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه घर वापस आए और खेलने के लिए बकरी तलाशने लगे, जब बकरी घर में ना मिली तो वालिदा ए माजिदा के पास आ कर पूछा: "अम्मी जान मेरी बकरी कहां है ?"

वालिदा ए मोह़तरमा ने कहा: "बेटा ! बकरी तो मर गई और ख़ादिमा ने उसे समुन्दर के कनारे फेंक दिया है।"

येह सुन कर ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़ादिमा से कहा: "तुम मेरे साथ चलो और मुझे बताओ कि तुम ने बकरी को कहां फेंका है ?"

ह़ज़रते महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी ख़ादिमा के साथ समुन्दर के

(1) अपने ज़माने के बड़े बूढ़े ह़ज़रात से।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

कनारे पहुंचे, वहां बकरी को मुर्दार पा कर अपनी ख़ादिमा से कहा: "तुम घर चली जाओ।"

ख़ादिमा बज़ाहिर वहां से चली गई मगर दूसरी जगह खड़ी हो कर देखने लगी कि आप क्या करते हैं ! ख़ादिमा ने देखा कि पहले तो आप बकरी के पास बैठ गए, फिर उस का कान पकड़ कर कहने लगे:

"يَا اَيَّتُهَا الشَّاةُ ! قُوْمِيْ بِحُكْمِ اللّٰهِ سُبْحَانَهُ وَ تَعَالٰى وَهُوَ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ."

"ऐ बकरी ! उस अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला के हुक्म से उठ जा ! जो जिलाता और मारता है, जो हर चीज़ पर क़ादिर है।"

इतना कहना था कि बकरी अपनी पहली जैसी ह़ालत में उठ कर खड़ी हो गई और आप उस के साथ ख़ुशी ख़ुशी घर लौट आए।

ख़ादिमा ने येह सारा माजरा आ कर आप की वालिदा ए मोह़तरमा को बता दिया।

जब येह वाक़िया मशहूर हुवा तो लोगों ने जान लिया कि अल्लाह तआ़ला ने आप को आप की माँ की दुआ़ के सबब विलायते अ़ज़ीमा आ़लिया कामिला से सरफ़राज़ फ़रमा दिया है।(1)

इस के अ़लावा भी बेशुमार करामात हैं जिन का ज़ुहूर सिग़र सिन्नी ही में ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से हुवा। येह अल्लाह तआ़ला का आप पर ख़ास फ़ज़्ल है और वोह जिसे चाहता है अपना फ़ज़्ल अ़ता करता है।

(1) ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार के दक्षिण (South) जानिब आज भी उस बकरी और ख़ादिमा की क़ब्रें मौजूद हैं।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

बाबे दुवम

इस बाब में चन्द फ़स्लें हैं:

फ़स्ले अव्वल

इस फ़स्ल में बयान होगा कि किस त़रह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से आप की मुलाक़ात हुई और किस त़रह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए आप को इ़ल्मे लदुन्नी ह़ासिल हुवा।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

वाक़िआ़ नंबर 3

मुआ़सिर अ़वाम व उ़लमा ए किराम से मन्क़ूल है:

जब ह़ज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क़ुरआने करीम की तालीम से फ़ारिग़ हो लिए, तो आप के दिल में इ़ल्मे शरीअ़त के ह़ुसूल का शौक़ बढ़ने लगा, जब शौक़ ह़द से ज़ियादा हो गया और महाइम (Mahim) में रह कर किसी त़रह इ़ल्मे दीन की तिशनगी बुझती ना देखी, तो रख़्ते सफ़र बांधने का इरादा कर लिया, इजाज़त लेने के लिए वालिदा ए मोह़तरमा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे मगर इतनी जुरअत कहां कि माँ से दूर जाने की बात भी ज़बान पर लाते, इस लिए ख़ामोश खड़े रहे।

(वालिदा ए माजिदा देखते ही भाँप गईं कि ज़रूर कोई बात है, इस लिए) दरयाफ़्त फ़रमाया: "क्या बात है बेटा, इतने चुप चाप क्यूं हो ? कोई ह़ाजत हो तो बताओ !"

(किसी त़रह़ हिम्मत जुटा कर) अ़र्ज़ की: "अम्मी ! मैं यहां रह कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल नहीं कर पा रहा, इस लिए आप से इजाज़त लेने आया हूं, आप मुझे सफ़र करने की इजाज़त दे दें ताकि मैं अपनी तालीम जारी रख सकूं।"

(भला वालिदा ए माजिदा को आप की जुदाई कब गवारा थी) कहने लगी: "मेरे दिल के चैन व क़रार इतनी जल्द बाज़ी मत करो, मेरे पास ही रहो, क्यूंकि मैं तुम्हारी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

येह सुन कर आप ग़मगीन हो गए और अ़र्ज़ की:

"अम्मी, अगर मैं यहीं रहूंगा तो कैसे पढ़ पाऊँगा ?"

वालिदा ने कहा: "बेटा तुम फ़िक्र क्यूं करते हो ? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला क़ादिरे मुत़लक़ है, वोह सब कुछ कर सकता है, वोह इस पर भी क़ादिर है कि यहीं कहीं तुम्हारी तालीम का बन्दोबस्त कर दे।"

(रब की क़ुदरत का किसे इन्कार) आप की उदासी ख़ुशियों में तबदील हो गई,

अ़र्ज़ की: "अम्मी जान ! फिर तो आप मेरे ह़क़ में दुआ़ कर दें कि

अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी उलफ़त व मह़ब्बत के साथ साथ इ़ल्मी कमाल भी अ़ता फ़रमा दे।"

जब रात हुई तो वालिदा ए मोह़तरमा ने उठ कर वुज़ू किया, दो रकअ़त नमाज़ अदा करने के बाद अपने रब से दुआ़ व मुनाजात करने लगीं, इधर आप दुआ़ से फ़ारिग़ हुईं, उधर रब ने आप की सुन ली।

रावी का बयान है: सुब्ह़ को नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद जब आप साह़िले समुन्दर पर पहुंचे तो वहां एक ख़ुश गुफ़तार, फ़सीह़ुल कलाम, रौशन चेहरे वाले शैख़ को एक बड़े से पत्थर पर बैठा देखा। येह पत्थर अब भी मौजूद है जो कि उस वक़्त साहिले समुन्दर पर था, लेकिन अब पानी में चला गया है, जब पानी कुछ कम होता है तो लोग ज़ियारत से मुशर्रफ़ होते हैं।(1)

ह़ज़रते मख़दूम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन के क़रीब जा कर उन्हें सलाम किया, जब शैख़ ने आप को देखा तो फ़रमाया:

मरह़बा ! मरह़बा ! अ़ली, क्या तुम कुछ पढ़ना चाहते हो ?

आप ने अ़र्ज़ की: "जी।"

शैख़ ने कहा: "अ़ली अब से हर रोज़ मेरे पास, यहां इस पत्थर पर, आ कर पढ़ लिया करो।"

(1) इन दिनों येह पत्थर **"ह़ज़रते मख़दूम का चिल्ला"** के नाम से मशहूर था, मगर लोगों ने वहां छोटी सी क़ब्र बना ली थी, पानी जब कम होता तो लोग दूध में कसीर पानी मिला कर दूध की थैली फ़रोख़्त करते, जाहिल अ़वाम उसे ख़रीदती और उस मस्नूई क़ब्र पर चढ़ाती। 24 मार्च 2023 ईसवी / यकुम रमज़ान 1444 हिजरी को हुकूमत ने वोह चिल्ला मुन्हदिम कर दिया, मुसलमान इस ख़ुराफ़ात से तो रुक गए, मगर ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की एक और यादगार भी मिट गई। **महाइमी**

आप ने अ़र्ज़ की: "हुज़ूर आप का इस्मे मुबारक किया है ?"

फ़रमाया: "मैं ख़िज्र हूं, लेकिन येह राज़ सिर्फ़ हम दोनों के बीच रहे, अगर तुम ने किसी को बता दिया तो फिर तुम मुझ से कभी नहीं मिल पाओगे।"

फिर फ़रमाया: "बैठ जाओ ! चलो आज ही से सबक़ शुरूअ़ करते हैं।"

आप बैठ कर पढ़ने लगे...।

एक त़वील मुद्दत तक आप रोज़ाना उस पत्थर के पास पहुंच कर ह़ज़रते ख़िज्र عَلَیْہِ السَّلَام से दर्स लेते रहे। येह सब अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम और आप की माँ की दुआ़ओं का नतीजा था।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ اَجْمَعِيْن

वाक़िआ़ नंबर 4

मुआ़सिर अ़वाम नीज़ उ़लमा ए किराम से येह भी मन्क़ूल है:

एक दिन जब ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी वालिदा ए मोह़तरमा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो उन्हों ने आप से दरयाफ़्त किया: "तुम सुब्ह़ सुब्ह़ रोज़ाना कहां चले जाते हो ?"

अ़र्ज़ की: "अम्मी, मैं पढ़ने जाता हूं।"

वालिदा ने पूछा: "किस जगह ?"

अ़र्ज़ की: "वोह समुन्दर के कनारे जो बड़ा सा पत्थर है ना ? वहां।"

वालिदा ने पूछा: "वहां किस से पढ़ते हो ?"

अ़र्ज़ कीः "अम्मी, मैं आप को कैसे बताऊं, जब कि उस्ताद साहि़ब ने मुझे किसी को भी बताने से मनअ़ किया है।"

वालिदा ने पूछाः "क्या उन्हों ने मुझे भी बताने से मनअ़ किया है?"

इस पर आप ख़ामोश हो गए।

वालिदा ने फिर पूछाः "तुम मुझे बताते क्यूं नहीं? मैं पूछ रही हूंः क्या उन्हों ने मुझे भी बताने से रोका है?"

(बाअदब लड़का कब तक ख़ामोश रहता?)

आख़िर आप को बताना ही पड़ा कि...

"उन का नाम ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام है।"

अगली सुब्ह़ ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पत्थर पर पहुंचे और ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के इनतिज़ार में देर तक बैठे रहे, मगर ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ना आए, दूसरे दिन भी ऐसा ही हुवा, जब यूँही दो दिन गुज़र गए तो आप अफ़्सुर्दा हो गए और वालिदा ए मोह़तरमा के पास आ कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे, वालिदा ने रोने का सबब पूछा तो कहने लगेः

"अम्मी, ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे मनअ़ किया था कि मैं उन का नाम किसी को बताऊं और पहले ही तम्बीह फ़रमा दी थी कि अगर मैं ने किसी को भी उन का नाम बताया, तो वोह मुझ से मुलाक़ात नहीं फ़रमाएंगे। अम्मी, उस दिन जब मैं आप के पास आया था और आप ने मुझ से उन का नाम पूछा था और मैं ने बता दिया था, तब से आज दो रोज़ हो गए, वोह मुझे पढ़ाने नहीं आए, अब आप ही बताइए कि मैं यहीं रह कर अपनी तालीम कैसे मुकम्मल कर पाऊँगा।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

येह सुन कर वालिदा के दिल को ठेस पहुंची (कि नाहक़ उस्ताद का नाम पूछ लिया, ना नाम पूछती ना अ़ली की तालीम मुनक़तअ़ होती) फिर आप को तसल्ली देते हुवे फ़रमाया:

"अ़ली ! तुम्हें फ़िक्र करने और ग़मगीन होने की बिलकुल ज़रूरत नहीं, अल्लाह तआ़ला क़ादिरे मुतलक़ है, वोह कोई ना कोई इंतिज़ाम ज़रूर फ़रमा देगा।"

और फिर सहरी के वक़्त वुज़ू कर के, दो रकअ़त नमाज़ अदा करने के बाद, अपने बेटे के ह़क़ में दुआ़ करते हुवे, अपने रब से यूं मुनाजात करने लगीं:

يَا ثِقَةَ الْوَاثِقِيْن ! يَا مُعْطِيَ السَّائِلِيْن ! يَا اِلٰهَ الْعَالَمِيْن ! (۱)

"मैं तेरी गुनाहगार बन्दी, तुझ से तेरे फ़ज़्ले अ़ज़ीम का सुवाल कर रही हूं कि तू मेरे बच्चे पर रहम फ़रमा और मेरे बेटे को (सफ़र की) मेह़नतो मशक़्क़त के बग़ैर इल्मे कामिल अ़ता कर दे, यक़ीनन तू ज़रूर इस पर क़ादिर है, मेरे मौला मेरी दुआ़ की लाज रख ले।"

चूं कि आप मुस्तजाबुद्दावात[2] थीं, आप की येह दुआ़ भी क़बूल हो गई।

तीसरे दिन जब ह़ज़रते फ़क़ीह मस्जिद में अ़स्र की नमाज़ पढ़ कर बाज़ार गए, वहीं ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हो गई और फिर वोह

(1) यानी ऐ वोह ज़ात जिस पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं, जो सुवाल करने वालों को अ़ता करने वाला है और जो सारे जहां का रब है।

(2) यानी: वोह ज़ात जिस की दुआ़ कभी रद्द नहीं होती।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

आप का हाथ पकड़ कर आप को समुन्दर के कनारे ले गए और फ़रमाया:

"अ़ली ! तुम्हारी माँ की दुआ़ओं की बरकत से अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें इ़ल्मे लदुन्नी दे दूं।"

इस के बाद ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने मुंह से एक लुक़मा निकाला और फ़रमाया: "अ़ली ! अपना मुंह खोलो"

जब आप ने अपना मुंह खोला तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह लुक़मा आप के मुँह में डाल दिया, आप ने वोह लुक़मा खा लिया।

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया: "अ़ली ! लो आज मैं ने तुम को बहुत से उ़लूमो फ़ुनून में माहिर कर दिया लेकिन याद रहे, इस इ़ल्म को संभाले रखना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।"

येह कह कर ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام रुपोश हो गए।

जब ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वापस मस्जिद आए और नमाज़े मग़रिब बा जमाअ़त अदा की, तो आप ने मह़सूस किया कि आप का सीना कमाले इ़ल्मो ह़िक्मत से भर गया है। आप बहुत ख़ुश हुवे और माँ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर क़दमों में गिर गए।

फिर कुछ इस त़रह़ कहने लगे: "अम्मी ! अल्लाह तआ़ला ने मुझे इ़ल्मे लदुन्नी अ़त़ा कर दिया, आप की दुआ़ओं से मुझे इ़ल्मो ह़िक्मत में कमाल ह़ासिल हो गया, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हर शै पर क़ुदरत रखता है।"

वालिदा ए मोह़तरमा ने फ़रमाया: "हां, मेरे बच्चे ! अल्लाह तआ़ला जो चाहे करता है और जिस का चाहे हुक्म देता है।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

फ़स्ले दुवम

उन किताबों के बयान में जो मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून में आप ने यादगार छोड़ी हैं। मुआ़सिर अ़वाम नीज़ उ़लमा ए किराम से मन्क़ूल है:

ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه तसव्वुफ़ में मुमताज़ थे और इस की वज्ह इमाम मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी की किताब **"फ़ुसूसुल हि़कम"**[1] थी जिस की आप ने दो शर्हें लिखी थीं और तीसरी शर्ह़ भी लिख रहे थे मगर वोह मुकम्मल ना हो सकी, उन शुरूह़ात में ना सिर्फ़ येह कि आप ने मोतरिज़ीन के शुकूको शुबहात दूर किए और उन के बाति़ल एतिराज़ात का - कि येह किताब कुफ़्रो शिर्क से भरी है - दफ़्अ़ किया है, बल्कि उस के मुन्दरिजात को शरीअ़ते मुह़म्मदिया - जिस पर अहले सुन्नत व जमाअ़त क़ाइम हैं - के मुता़बिक़ इस त़रह़ साबित किया है कि अपनों का दिल मुतमइन कर दिया और ग़ैरों के लिए **"फ़ुसूसुल हि़कम"** के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ बोलने की भी गुंजाइश बाक़ी ना रखी।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(1) इस से **"ख़ुसूसिन्निअ़म फ़ी शर्हि फ़ुसूसिल हि़कम"** की तरफ़ इशारा है, येह शैख़े अकबर ह़ज़रते मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه की ला जवाब किताब फ़ुसूसुल हि़कम की शर्ह़ है। फ़ुसूसुल हि़कम वोही किताब है जिस में पहली मरतबा शैख़े अकबर ने फ़लसफ़ा ए वह़दतुल वुजूद निहायत ही मुफ़स्सल अन्दाज़ में बयान किया था, ह़ज़रते मख़दूम महाइमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने इस शर्ह़ में "फ़ुसूसुल हि़कम" पर होने वाले बेजा एतिराज़ात का निहायत वाज़ेह़ अन्दाज़ में रद्द फ़रमाया है। येह किताब 727 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है और दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत, लुबनान से शाएअ़ हो चुकी है। येह किताब मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है।

इस के अ़लावा आप की तसानीफ़ मुन्दरजा ज़ैल है:

(2) शर्हुल फ़ुसूस[(1)]

फ़ुसूस की येह ऐसी शर्ह है जिस की नज़ीर नहीं मिलती।

(3) तर्जमतु लमआ़तिल इ़राक़ी[(2)]

लमआ़त, इमाम इ़राक़ी की किताब है। आप ने इस का तर्जमा फ़रमाया है।

(4) शर्हु लमआ़तिल इ़राक़ी[(3)]

(1) इस से **"मशरउ़ल ख़ुसूस इला मआ़नियिन्नुसूस"** की तरफ़ इशारा है, शैख़ सदरुद्दीन क़ोनवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा: 671 हिजरी / 1272 ईसवी) जलीलुल क़द्र सूफ़ी गुज़रे हैं। आप शैख़े अकबर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पैरोकार हैं और अहले तसव्वुफ़ के नज़दीक शैख़े कबीर से पहचाने जाते हैं। "फ़ुसूस" आप की मशहूर किताब है। जिस में आप ने मुशाहदात, मुक़ामात, तजल्लियात पर ख़ास तौर से बह़स की है। फ़ना व बक़ा जैसे दक़ीक़ और पेचीदा मसाइल पर सैर ह़ासिल बह़स की है। ह़ज़रते मख़दूम अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़ुसूस के मज़ामीन को और ज़ियादा फैला दिया है और मुश्किल मुक़ामात की तशरीह़ भी कर दी है। येह किताब 270 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है और दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत, लुबनान से शाएअ़ हो चुकी है।

मुह़म्मद ह़सन ग़ोसी शत़्तारी, गुलज़ारे अबरार में इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ लिखते है: आप शैख़ सदरुद्दीन क़ोनवी की फ़ुसूस की शर्ह़ लिखने के बाद कुछ कम पाँच साल इमकानी लिबास में ज़िन्दा रहे। और शर्ह़ की तालीफ़ 830 हिजरी / 1426 ईसवी में हुई। येह नुस्ख़ा भी मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है।

(2) येह किताब फ़ारसी ज़बान में है, जिस के मुसन्निफ़ शैख़ फ़ख़रुद्दीन इ़राक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा: 688 हिजरी / 1289 ईसवी) हैं। ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने किताब की इफ़ादियत को देखते हुवे अ़रबी में इस का तर्जमा किया।

(3) **"लमआ़त"** के तर्जमे से फ़ारिग़ होने के बाद आप ने मह़सूस किया कि इस के मज़ामीन में इजमाल ज़ियादा है, इस लिए आप ने इस की एक जामेअ़ शर्ह़ तस्नीफ़ फ़रमाई।

लमआ़त की आप ने शर्ह़ भी लिखी और इस अन्दाज़ में लिखी कि मुख़ालिफ़ीने तसव्वुफ़ ह़रज में मुबतला हो गए।

(5) अन्नूरुल अज़रहर फ़ी कशफ़िल क़ज़ाइ वल क़द्र[1]

(6) अज़्ज़ौउल अज़हर फ़ी शर्ह़िन्नूरिल अज़हर[2]

येह किताब आप की किताब "अन्नूरुल अज़हरु फ़ी कशफ़िल क़ज़ाइ वल क़द्र" की शर्ह़ है।

(7) इस्तिजलाउल बसर फ़िर्रद्दि अ़ला इस्तिक़्साइन्नज़र[3]

येह किताब इब्ने मुत़ह्हिर ह़िल्ली की किताब "इस्तिक़्साउन्नज़रि" के जवाब में लिखी गई है।

(8) इनआ़मुल मलिकिल अ़ल्लाम बि अह़कामि हुक्मिल अह़काम[4]

येह किताब शरीअ़त के असरारो रुमूज़ और इस के मह़ासिन पर लिखी गई है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(1) इस किताब में ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नज़रिया ए क़ज़ा व क़द्र की अक़्ली व नक़्ली दलाइल से मज़ीद तौज़ीह़ व तशरीह़ की है।

(2) येह किताब भी आप ने रिसाला "अन्नूरुल अज़हर फ़ी कश्फ़िल क़ज़ाइ वल क़द्र" की शर्ह़ में लिखी है। मुकम्मल नुस्ख़ा दस्तयाब ना होने की वज्ह से यूसुफ़ खट खट्टे ने नाक़िस ही छपवा दिया था। येह मत़बूआ़ रिसाला जामेअ़ मस्जिद मुंबई के कुतुब ख़ाना मुहम्मदिया में मौजूद है। इस का एक नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास भी मौजूद है।

(3) येह किताब शीआ़ आ़लिम इब्ने मुत़ह्हिर ह़िल्ली के जवाब में लिखी गई है। इस का ज़िक्र तो अक्सर लोगों ने किया है, मगर अब येह नापैद है।

(4) येह किताब शरीअ़त के असरारो रुमूज़ पर लिखी गई है जो कि इल्मे ह़दीस का सब से ज़ियादा दक़ीक़ बाब है। इस किताब में आप ने हर बात को अ़क़्ल की कसोटी पर परख कर पेश किया है। हिन्दूस्तानी उ़लमा में ह़ज़रते मख़दूम अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वोह ज़ात है जिस ने सब से पहले इस फ़न पर क़लम उठाया और एक मुस्तक़िल किताब लिखी, अफ़सोस कि अब नापैद है।

(9) शर्हु रिसालतिल वुजूद [1]

(10) इज़िल्लतुत्ताईद फ़ी शर्हि रिसालतित्तौहीद [2]

(11) मिरआतुल हक़ाइक़ [3]

येह रिसाला "जामे जहांनुमा" का तर्जमा है।

(12) तफ़सीरुल क़ुरआनिल अज़ीज़ [4]

येह आप की सब से अज़ीमुश्शान तस्नीफ़ है, जिस में आप ने क़ुरआने करीम के हर हर कलिमे और हर हर आयत की मा क़ब्ल व मा

---

(1) इस का अस्ल नाम "अल वुजूदु फ़ी शर्हि अस्माइल माबूद" है। इस किताब में आप ने अल्लाह तआला के ज़ाती और सिफ़ाती नामों की तशरीह व ख़वास लिखे हैं। हज़रते सय्यिद इमामुद्दीन गुलशन आबादी ने तारीख़ुल औलिया में इस का ज़िक्र किया है। लेकिन अब उस का पता नहीं चलता।

(2) इस का अस्ल नाम "अजिल्लतुत्ताईद फ़ी शर्हि अदिल्लतित्तौहीद" है। येह आप ही की तस्नीफ़ "अदिल्लतुत्तौहीद" की शर्ह है। "अदिल्लतुत्तौहीद" लिखने के बाद आप ने इस के मुश्किल उल्फ़ाज़ की तौज़ीह की ज़रूरत महसूस की, तो इस की शर्ह लिखने का आग़ाज़ फ़रमाया और निहायत मुफ़स्सल अन्दाज़ में पाया ए तकमील तक पहुंचाया है। येह नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास है।

(3) "मिरआतुल हक़ाइक़" सूफ़ी मुहम्मद इज़्ज़ुद्दीन मग़रिबी की फ़ारसी किताब जामेअ जहांनुमा का अरबी तर्जमा है। इस का मौज़ूअ मरातिबे वुजूद है, येह किताब निहायत मुजमल और मुबहम है और तसव्वुफ़ की मुश्किल तरीन किताब शुमार की जाती है।

(4) इस तफ़्सीर का नाम है: "तबसीरुर्रहमान व तैसीरुल मन्नान बाज़ु मा यूशीरु इला एजाज़िल क़ुरआन" और "तफ़्सीरे महाइमी" व "तफ़्सीरे रहमानी" से मशहूर है, दूसरी तफ़सीरों की ब निस्बत इस तफ़्सीर का अन्दाज़ कुछ ख़ास है। इस की सब से बड़ी ख़ूबी रब्ते आयात है और दूसरी ख़ूबी येह है कि हर सूरत से पहले बिस्मिल्लाह की नई तौज़ीह व तशरीह की गई है। तीसरी ख़ूबी येह है कि हर सूरत से पहले इस का मुख़्तसर तआरुफ़ कराया है और वज्हे तसमिया बयान की है। इसी तरह एक ख़ास बात येह भी है कि दूसरे मुफ़स्सिरीन की तरह आप सर्फ़ व नह्व के पेचीदा मसाइल से नहीं उलझते और ना ही एक एक लफ़्ज़ पर लम्बी लम्बी बहसें करते हैं, बल्कि छोटे छोटे जुम्लों और वाज़ेह इशारों से आयाते क़ुरआनी की तफ़्सीर बयान करते हैं।

इस का एक नुस्ख़ा "अंजुमने अहले सुन्नत अशरफ़ी दारुल मुताला" अल जामिआतुल अशरफ़िया, मुबारक पूर, आज़म गढ़ में मौजूद है। जिस की तबाअत दो ज़ख़ीम जिल्दों में मतबआ ए बोलाक़, मिस्र से हुई है। और तीन नुस्ख़े "कुतुब ख़ाना ख़लीली मख़दूमी" जामेअ मस्जिद माहिम में

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

बाद से इस तरह रब्त पैदा किया है, जिस की नज़ीर नहीं मिलती, ना ही आप के अलावा किसी और ने ऐसी किताब लिखी है।

मज़कूरा बाला बातें हज़रत मौलाना मुहम्मद ख़तीब कल्याणी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब से माख़ूज़ हैं। इस के अलावा और भी आप की तसानीफ़ हैं। (1)

(बक़िया पिछले सफ़हे का हाशिया)

मौजूद हैं, एक नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास भी है। तफ़सीरे महाइमी का एक क़लमी नुस्ख़ा कुतुब ख़ाना दरगाह पीर मुहम्मद शाह अहमदाबाद में मौजूद है। साले तहरीर 1159 हिजरी है। और अब "किताब नाशिरुन बैरूत, लुबनान (Lebanon)" से तीन जिल्दों में तख़रीज शुदा शाएअ हो चुकी है। येह नुस्ख़ा भी मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है।

अलहम्दुलिल्लाह मज़ीद दो क़लमी नुस्ख़े पी डी एफ़ (P.D.F) की शक्ल में और हाथ लगे हैं:

जिन में से एक तुर्की (Turkey) की लाइब्रेरी (T.C. ISTANBUL FATIH LIBRARY) से हासिल हुवा है। जिस पर "अस्सय्यिद इब्राहीम" नाम की मोहर भी लगी हुई है।

और दूसरा तुर्की (Turkey) ही की लाइब्रेरी "MURAD MOLLA LIBRARY" से हासिल हुवा है। जिस पर "عَبْدُاللهِ آفَنْدِیْ اِبْنُ الْمُفْتِیِ الْمَرحُوْم مِنْقَارِیْ زَادَہ یَحْیٰی آفَنْدِیْ غُفِرَ لَهُمَا" की मोहर लगी हुई है।

(1) यूं तो आप 103 किताबों के मुसन्निफ़ हैं। (हाशिया ज़मीरुल इन्सान, सफ़हा: 3, मतबआ ए शिहाबिया, मुंबई) मगर लोगों की नाक़द्री कहीए या तक़दीर का करना, कि अक्सर किताबें ज़ाएअ हो गईं। आप ने जो भी किताब लिखी निहायत इल्मी लिखी, हक़ायक़ो दक़ाइक़ के ऐसे दरिया बहाए हैं कि क़ारी हैरत में डूब कर वाह! वाह! पुकार उठता है, येह ग़म हल्का होने का नाम नहीं लेता कि वोह किस क़दर इल्मी व तहक़ीक़ी किताबें रही होंगी जो ज़ाएअ हो गईं, अब सिवाए अफ़सोस के और क्या किया जा सकता है, फिर भी तहक़ीक़ व जुस्तजू जारी है, शायद कभी सुब्ह की किरन नमूदार हो।

मज़कूरा 12 किताबों के अलावा जिन के बारे में कुछ मालूम हो सका, उन की तफ़सील येह है:

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(बक़िया पिछले सफ़ह़े का ह़ाशिया)

(1) अदिल्लतुत्तौह़ीद

येह रिसाला शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी के नज़रिया ए वह़दतुल वुजूद की ताईद में लिखा गया है। जिस में आप ने इस नज़रिये को किताब व सुन्नत, आइम्मा ए दीन, मुफ़स्सिरीन और सूफ़िया के अक़्वाल से साबित किया है। इस रिसाले के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े मुह़क़्क़िक़ शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते है:

”بغایت درجہ موجز ومنقح ،درتحریر دلائلِ عقلیہ و براہینِ قاطعہ وازالۂ شکوک واحاطۂ شبہات، سخن را بغایت تدقیق نمودہ۔“

(अख़बारुल अख़यार, सफ़ह़ा: 179)

“अ़क़्ली और यक़ीनी दलाइल में और शुकूक व शुब्हात दूर करने के सिलसिले में येह मुख़्तसर सी किताब है। मुसन्निफ़ ने अपनी बात बहुत बारीकी से पेश की है।”

येह वोही रिसाला है जिस की शर्ह का ज़िक्र मुसन्निफ़ मौलाना इब्राहीम मदनी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने नंबर10 के तह़त किया है।

(2) अल फ़िक़्हुल मख़्दूमी

येह किताब फ़िक़्हे शाफ़ेई में है, इस किताब को आप की जानिब मन्सूब किया जाता है, मगर ज़बान व बयान का जो उस्लूब आप की दीगर किताबों में पाया जाता है, वोह इस में नहीं मिलता। यूसुफ़ खट खट्टे साह़िब के नज़दीक या तो इस में तह़रीफ़ कर दी गई है या येह आप की बिलकुल इबतिदाई ज़माने की तस्नीफ़ है। 1314 हिजरी / 1896 ईसवी में मत़बआ़ गुलज़ारे ह़ुसैनी, मुंबई से इस के अस्ल मतन के साथ इस का तर्जमा शाएअ़ हो चुका है, मुतर्जिम मौलाना अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उ़समानी हैं। येह नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है।

(3) इमह़ाज़ुन्नसीह़ा

शैख़े अकबर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी के दिफ़ाअ़ में आप की येह दूसरी किताब है। इस किताब से शाह अ़ब्दुल लत़ीफ़ मारूफ़ बिह सय्यिद शाह मुह़युद्दीन क़ादिरी देलूरी ने अपनी तस्नीफ़ “फ़स्लुल ख़ित़ाब बैनल ख़त़ाइ वस्सवाब” में काफ़ी मदद ली है। “इमह़ाज़ुन्नसीह़ा” का एक क़लमी नुस्ख़ा ख़ुदाबख़्श ओरिएन्टल लाइब्रेरी, पटना (Khuda Bakhsh Oriental, Library, Patna) में है।

(4) अर्रुतबतुर्रफ़ीअ़ह फ़िल जमइ़ वत्तौफ़ीक़ बैन असरारिल ह़क़ीक़ति व अनवारिश्शरीअ़ह

येह किताब इब्ने अ़रबी पर किए गए एतिराज़ात के जवाब में लिखी गई है। जब ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡه को येह मालूम हुवा कि यमन (Yemen) के अ़लाक़े ज़बीद के रहने वाले शैख़ इस्माईल मुक़री ने एक किताब बनाम “अज़्ज़रीअ़ह इला नुसरतिश्शरीअ़ह” लिखी है। और इस में सूफ़िया ए किराम और ख़ास कर इब्ने अ़रबी पर एतिराज़ात किए हैं। तो आप ने इस के जवाब

(बक़िया पिछले सफ़हे का हाशिया)

में येह किताब लिखी और दलाइलो बराहीन से इस तरह मुज़य्यन किया कि अब मोतरिज़ के एतिराज़ाते बे वुक़अ़त नज़र आते हैं।

येह किताब 230 सफ़हात पर मुश्तमिल है। इस किताब का क़लमी नुस्ख़ा कुतुब ख़ाना दरगाह पीर मुहम्मद शाह अहमदाबाद (Ahmedabad) मैं मौजूद है। येह नुस्ख़ा मख़दूम महाइमी की हयात ही में यानी 802 हिजरी / 1399 में लिखा गया। इस्माईल मुक़री की किताब को सुर्ख़ रौशनाई से बतौरे मतन और मख़दूमे महाइमी की जवाबी किताब को सियाह रौशनाई से बतौरे शर्ह उस के नीचे लिखा गया है। इस किताब पर तीन मोहरें हैं एक जहांगीर बादशाह की, दूसरी "करीमा बह बख़्शा ए बर हाले मा" की और तीसरी "फ़य्याज़ुद्दीन मुज़फ़्फ़रुद्दीन अ़दम तबदील " की

आख़िर में येह जुमला लिखा है:

يَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَقْتَ الْعَصْرِ، اَلثَّانِى مِنْ صَفَرٍ، سَنَةَ اثْنَتَيْنِ وَ ثَمَانِ مِائَةٍ مِّنَ الْهِجْرَةِ النَّبَوِيَّةِ عَلٰى صَاحِبِهَا اَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّحِيَّةِ.

यानी जुमुआ के दिन, अ़सर के वक़्त, 802 हिजरी / 1399 ईसवी में किताबत मुकम्मल हुई।

(5) इराअतुद्दक़ाइक़ फ़ी शर्हि मिरआतिल हक़ाइक़

"मिरआतुल हक़ाइक़" के मुन्दरिजात चूं कि बहुत मुजमल और मुबहम थे। इस लिए आप ने "इराअतुद्दक़ाइक़ फ़ी शर्हि मिरआतिल हक़ाइक़" के नाम से इस की शर्ह लिखी। येह मतबआ़ ए तरक़्क़ी, भिंडी बाज़ार (Bhendi Bazar) से छप चुकी है। इस का क़लमी और मतबूआ़ नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है, हाल ही में मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी ने "मरातिबे वुजूद" के नाम से इस का तर्जमा किया है, जो "अशरफ़िया इस्लामिक फ़ाउन्डेशन हैदराबाद, दक्कन" और "अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण" के बाहमी इश्तिराक से शाएअ़ हो कर दादो तहसीन हासिल कर चुका है। और अल्लाह ने चाहा तो अन क़रीब अ़रबी इबारत के साथ शाएअ़ किया जाएगा।

(6) ज़वारिफ़ुल्लताइफ़ फ़ी शर्हि अ़वारिफ़िल मआ़रिफ़

फ़न्ने तसव्वुफ़ में अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़ शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 632 हिजरी / 1234 ईसवी) की मशहूर तस्नीफ़ है। तेरहवीं सदी में जब सलासिल की तंज़ीम हुई तो दीगर सिलसिलों ने भी इस किताब को अपना लिया। इस किताब की ख़ासियत येह है कि इस में तसव्वुफ़ के बुनियादी अक़ाइद, तरीक़ा ए अ़मल, ख़ानक़ाहों की ताज़ीम, मुरीदीन व शुयूख़ के तअ़ल्लुक़ात और दीगर दीनी व अख़्लाक़ी मसाइल, क़ुरआनो हदीस की रौशनी में बयान किए गए हैं।

किताब की इफ़ादिय्यत देखते हुवे हज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस की शर्ह ज़वारिफ़ुल्लताइफ़ के नाम से लिखी और इस के मुजमल व मुबहम गोशों की वज़ाहत कर दी और साथ ही साथ अहादीस और सूफ़िया की किताबों से मज़ीद वाक़िआ़त का इज़ाफ़ा किया, इस शर्ह का एक क़लमी नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है, एक नुस्ख़ा कुतुब ख़ाना मुहम्मदिया जामेअ़ मस्जिद, मुंबई में मौजूद है। कातिब का नाम मुहम्मद अ़ज़मतुल्लाह बारी बिन मौलवी करामतुल्लाह है।

(बक़िया पिछले सफ़्हे का हाशिया)

(7) शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार

येह ह़दीसे सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार की तशरीह़ में मुख़्तसर रिसाला है । और येह रिसाला “अज़्जौउल अज़्हर फ़ी शर्हिन्नूरिल अज़्हर” के आख़िर में शामिल है। जो जामेअ़ मस्जिद मुंबई के कुतुब ख़ाना मुहम्मदिया में मौजूद है। इस का एक मख़तूता नुस्ख़ा इंटरनैट पर इस ऐडरैस के तह़त मौजूद है।

https://iiif.lib.harvard.edu/manifests/view/drs:12116806$1i

येह रिसाला 16 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल है । दुआ़ ए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार सुर्ख़ रौशनाई से लिखी हुई है। और किताबत की तकमील 1265 हिजरी / 1848 ईसवी में हुई है। अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़ के मालिक जनाब अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार साहिब -उस्ताद बांद्रा उर्दू हाई स्कूल ने 2017 ईसवी में इस की त़बाअ़त करवाई है। इस के दो क़लमी नुस्ख़े और मत़बूआ़ नुस्ख़ा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी के पास मौजूद है।

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई से इस की दोबारा इशाअ़त हुई है, जिस की अ़रबी इ़बारत की तहक़ीक़ और इस का दुआ़ई अन्दाज़ में तर्जमा मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी ने किया है।

(8) अर्रिसालतुल अ़जीबा

येह रिसाला ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ग़ैर मामूली सलाहिय्यत व क़ाबिलिय्यत, ज़िहानतो फ़तानत और आप के तबह्हुरे इ़ल्मी का शाहकार है। येह ऐसा रिसाला है जो क़ारी को ह़ैरतज़दा कर देता है। इस में आप ने निहायत बारीकी के साथ “الٓمّٓ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ” के कुल एक अरब, अट्ठाईस करोड़, चौतीस लाख, पैंतालीस हज़ार, पाँच सौ चौबीस (1, 48, 34, 45, 524) वुजूहे एराब बताए हैं।

(9) शर्हुल क़सीदतिर्राइय्यह

क़सीदए राइय्यह ह़ुरमते समाअ़ में था, मगर आप ने मुदल्लल त़रीक़े से समाअ़ के जवाज़ पर इस क़सीदे की शर्ह़ लिखी।

(10) तनवीरुल जिनान फ़ी तफ़सीरिल फ़ातिह़ा

येह सिर्फ़ सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर है और तफ़्सीरे महाइमी के अ़लावा एक अलग तफ़्सीर है।

(11) अल फ़तावल मख़दूमिया

येह, उन फ़तावाजात का मजमूआ़ है, जिन का आप से इस्तिफ़्ता किया गया था।

(12) असरारुल फ़िक़्ह

येह किताब फ़िक़्ह के असरारो रुमूज़ पर लिखी गई है।

फ़स्ले सुवम

इस फ़स्ल में उन करामात का ज़िक्र है, जिन का ज़ुहूर आप के बालिग़ होने के बाद से आप के विसाल तक हुवा।

वाक़िआ नंबर 5

मुआ़सिरीन से मन्क़ूल है:

हज़रते मख़दूमे महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की एक ख़ादिमा थीं जो बड़ी आ़बिदा, ज़ाहिदा, क़ियामुलैल[(1)] और मुस्तजाबुद्दावात[(2)] थीं, उन्हें त़य्ये मनाज़िल व क़त़ए मराह़िल[(3)] के राज़ मालूम थे और सभी का कहना है कि वोह रब्बानी आ़लिमा थीं जिन से बड़ी बड़ी करामात का ज़ुहूर हुवा था।

मुआ़सिर अ़वाम नीज़ उ़लमाए किराम से मन्क़ूल है:

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(बक़िया पिछले सफ़हे का ह़ाशिया)

(13) ग़ायतुल जूद बि मारिफ़ति वह़दतिल वुजूद

येह रिसाला वह़दतुल वुजूद के मौज़ूअ़ पर है। इस रिसाले का तज़किरा अब तक किसी तज़किरा निगार ने नहीं किया था, येह रिसाला ह़लब (Aleppo) के एक आ़लिमे दीन मुह़म्मद अमीन इतक़ी के कुतुबख़ाने में मौजूद था, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) से मुफ़्ती फ़ारूक़ महाइमी की तह़क़ीक़ व तर्जमे के साथ शाएअ़ किया गया है।

किताब में मौजूद 12 किताबों के अ़लावा इन 13 किताबों का मज़ीद पता चलता है। यूं ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की किताबों की तादाद 25 तक पहुँचती है। **महाइमी**

(1) यानी रातों को इ़बादत में गुज़ारने वाली।

(2) यानी: वोह ज़ात जिस की दुआ़ कभी रद्द नहीं होती।

(3) औलियाउल्लाह की एक करामत, जिस में ज़मीन गोया इस दरजा सिमट जाती है कि उन का एक क़दम कई कई मील पर पड़ता है और महीनों की मसाफ़त घन्टों और दिनों में त़ै हो जाती है। **महाइमी**

हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़ादिमा बहुत नेक थी, वोह हमेशा आप की वालिदा की ख़िदमत में लगी रहती, हज़रते फ़क़ीह मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब अपना कपड़ा धुलवाना होता, तो उसी ख़ादिमा को दे देते। उस ख़ादिमा की आदत थी कि जब वोह आप के कपड़े धोती, तो पहली मरतबा का धोवन वोह एक बर्तन में जमअ़ कर लेती और उसे अपने पीने के इस्तिमाल में लाया करती, इस धोवन के पीने की बरकत थी कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उसे विलायते अ़ज़ीमा अ़ता कर दी और त़य्ये मनाज़िल व क़त़ए मराह़िल की क़ुदरत दे दी।

जैसा कि मौलाना ग़रीब मुह़युद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है:

मैं ने मोतमद मुतक़द्दिमीन से सुना है कि एक दिन ज़ोहर के वक़्त हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام फ़क़ीराना लिबास में मलबूस हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मिलने आए, हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ोहर की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद में बैठे थे, हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से मुलाक़ात की, मुसाफ़ह़ा किया और उन के पास बैठ गए।

हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सोचा कि येह फ़क़ीर दूर से आया है, भूका होगा, इस लिए उन से कहा: "आप यहीं बैठिए, मैं ज़रा घर से हो कर आता हूं।"

येह कह कर आप घर तशरीफ़ ले आए, जब वालिदा ए मोह़तरमा के पास पहुंचे तो माँ ने कहा: "बेटा ! आओ ! मेरे साथ खाना खा लो।"

आप ने अ़र्ज़ की: "मैं यहां कैसे खा लूं, जब कि वोह दरवेश जो मुझ से मिलने आए हैं, मस्जिद में बैठे हैं।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

येह सुन कर माँ ने कहा: "ऐसा करो तुम खाना खा लो और ख़ादिमा के हाथों उन्हें खाना भिजवा दो।"

आप ने ख़ादिमा से कहा: "येह खाना ले जा कर उस दरवेश को दे दो जो मस्जिद में, फ़ुलां जगह, फ़ुलां लिबास पहने बैठे हैं।"

ख़ादिमा खाना ले कर इस त़रह़ पहुंची कि एक क़दम मस्जिदे बैत[(1)] की चौखट पर रखा और दूसरा मस्जिद की चौखट पर, मगर दरवेश मस्जिद में नज़र ना आए, फिर उस ने नज़र उठा कर ख़ाना ए काबा में देखा, तो वोह दरवेश ह़रमे काबा में बैठे हुवे दिखाई दिए, ख़ादिमा ने तीसरा क़दम मस्जिदे ह़राम में रखा और फ़क़ीर से कहा:

"आप यहां बैठे हैं ? जब कि मेरे मालिक ने आप से कहा था कि आप मस्जिद में रुके रहें, वोह घर से हो के आते हैं, लीजिए उन्हों ने येह खाना भिजवाया है।" ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ख़ामोशी से उस की बातें सुनते रहे, फिर वोह खाना उस के हाथों से ले लिया और उसे कुछ न कहा।

इस त़रह़ अल्लाह तबारक तआ़ला ने ह़ज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कपड़े का धोवन पीने की बरकत से, आप की ख़ादिमा को विलायते अ़ज़ीमा अ़ता फ़रमाई।

﴿ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ﴾ (٢)

(1) **मस्जिदे बैत:** घर के उस ह़िस्से को कहते हैं, जो ख़वातीन इ़बादत व रियाज़त करने के लिए ख़ास कर लेती हैं।

(2) अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरतुल बक़रह 2, आयत नंबर: 21

तर्जमा: येह अल्लाह का फ़ज़्ल है, देता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

(मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

वाक़िआ नंबर 6

मुआसिर अ़वाम नीज़ उ़लमा ए किराम से मन्क़ूल है: महाइम (Mahim) में एक बहुत बड़ा हिंदू ताजिर था जिस के पास बहुत सारे पानी के जहाज़ थे, जिन्हें वोह समुन्दर में तिजारत की ग़रज़ से भेजा करता था।

हुवा कुछ यूं कि एक मरतबा एक जहाज़ तिजारत की ग़रज़ से किसी दूर बंदरगाह की तरफ़ रवाना हुवा और फिर सात साल तक उस की कुछ ख़बर ना मिली कि डूबा या बचा। इसी वज्ह से जहाज़ पर गए मज़दूरों के रिश्तेदार भी परेशान थे, एक रोज़ वोह सब मिल कर ताजिर के पास आए और उस से दरयाफ़्त किया: “जहाज़ की कोई ख़बर मिली ? बराए करम आप हमें उस की सह़ीह़ सह़ीह़ ख़बर से आगाह कर दें, क्यूंकि अब हम में मुबहम सी ख़बर सुनने की ताक़त नहीं रह गई है।”

इस पर ताजिर ने कहा: “देखो भाइयो ! मुझे ख़ुद ख़बर नहीं कि वोह सह़ीह़ व सलामत है भी या डूब गया, जब मैं ख़ुद ही इस मुआमले में ह़ैरानो परेशान हूं, तो मैं आप लोगों को इस की इत़्तिला कैसे दे सकता हूं ?”

जब वोह लोग चले गए तो ताजिर को बहुत अफ़सोस हुवा, उस ने अपने घर में नुजूमियों की एक जमाअ़त बुलाई जो ह़िसाब के भी माहिर थे, उन से जहाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया, वोह इ़ल्मे ह़िसाब और नुजूमी त़रीक़े से उस की ख़बर निकालने की कोशिश करने लगे, मगर उन की राए किसी एक ख़बर पर ना जमी, तो बोले: “इस जहाज़ की ख़बर, मुबहम सी ही मिल रही है, त़वील मुद्दत हो जाने की वज्ह से कोई सह़ीह़ ख़बर नहीं मिल पा रही है।”

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID MUMBAI

ताजिर ने जब नुजूमियों से उन की बे बसी सुन ली, तो उस ने पंडितों और जोगियों को बुलाया और उन से जहाज़ के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया, उन में से कुछ ने कहा: "जहाज़ के मुआ़मले को काफ़ी अ़र्सा हो गया है, उस की ख़बर कैसे दरयाफ़्त की जा सकती है ? अगर सह़ीह़ व सलामत होगी तो उस की ख़बर मिल जाएगी वरना तो ग़ालिबे गुमान यही है कि वोह डूब गया होगा।" और कुछ ने कहा: "वोह जहाज़ सह़ीह़ व सलामत है, मगर किसी दूर मकान पर है, आप ग़म ना करें, जहाज़ आ जाएगा।"

जब ताजिर ने देखा कि उन की ख़बरें अलग अलग हैं और कोई यक़ीनी ख़बर नहीं मिल पा रही है, तो वोह ग़मगीन हो गया। इतने में वहां एक मुसलमान आया, उस ने देखा कि ताजिर ग़मगीन बैठा है, तो दरयाफ़्त किया: "आज आप इतने ग़मगीन क्यूं हैं ?" ताजिर ने सारा माजरा कह सुनाया कि जहाज़ का क्या हुवा, उस ने नुजूमियों और पंडितों से क्या सुवाल किया और उन लोगों ने कैसा मुख़्तलिफ़ जवाब दिया।

मुसलमान ने येह सब बातें सुन कर ताजिर से कहा: मेरी बात मानो तो तुम मेरे साथ ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में चलो और उन से इस जहाज़ के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करो, अल्लाह के फ़ज़्लो करम से वोह तुम्हें उस जहाज़ की सह़ीह़ सह़ीह़ ख़बर दे देंगे।

येह सुन कर ताजिर फ़ौरन खड़ा हुवा और मुसलमान के साथ चल कर ह़ज़रत फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, आप मस्जिद के दरवाज़े पर बैठे थे, ताजिर पहले जा कर आप के क़दमों में गिरा, क़दमों का बोसा लिया, फिर बा अदब खड़ा हो गया।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने पूछा: "किस काम से आए हो ?"

उस ने अ़र्ज़ की: "हुज़ूर ! आप की ख़िदमत में ह़ाज़िरी का मक़सद येह है कि मैं एक बड़े जहाज़ के बारे में जानना चाहता हूं जो महाइम की बंदरगाह से तिजारत के लिए रवाना हुवा था, मगर सात साल हो गए, उस की कोई ख़बर नहीं कि सह़ीह़ व सलामत है भी या डूब गया।"

हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया: "तुम क़िब्ला रू हो कर बैठ जाओ, अपनी आंखें बंद कर लो और अपने दिल की आंख से देखो कि जहाज़ का क्या ह़ाल है !"

जब वोह क़िब्ला रू हो कर बैठा और अपनी आंखें बंद कर ली तो हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस पर एक ऐसी नज़र डाली कि उस का दिल मुनव्वर हो गया, उस ने अपने दिल की आंख से समुन्दर की जानिब देखा, तो उसे महाइम की बंदरगाह से क़रीब ही अपना जहाज़ सह़ीह़ व सालिम नज़र आता दिखाई दिया, उस ने ख़ुशी ख़ुशी अपनी आंखें खोली और अ़र्ज़ की: "मैं ने अपना जहाज़ सह़ीह़ व सलामत देखा है, वोह महाइम की बंदरगाह की तरफ़ रवां दवां है और बहुत क़रीब आ चुका है और आप की बरकत व करामत से आज इस बंदरगाह पर पहुंच जाएगा, सय्यिदी मौलाई ! अगर आप का करम ना होता तो मैं जहाज़ का येह ह़ाल हरगिज़ ना देख पाता।"

हज़रते फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस से फ़रमाया: "अब तुम जाओ ! अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मुराद पूरी करे।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

वोह वहां से आ गया और कुछ लोगों को जहाज़ देखने के लिए समुन्दर के कनारे भेजा, जब वोह समुन्दर के कनारे पहुंचे तो उन्हें दूर समुन्दर में जहाज़ नज़र आ गया।

जब येह ख़बर उस ताजिर को मिली तो वोह और उस के साथ और लोग भी ख़ुशी ख़ुशी वहां पहुंचे, फिर जहाज़ भी आ कर महाइम के बंदरगाह पर लंगर अन्दाज़ हुवा[1]

मज़दूर जहाज़ से उतरे, ताजिर से ख़ुशी ख़ुशी मुलाक़ात की, नाख़ुदा (जहाज़ चलाने वाले) ने ताजिर से कहा: "जब से हम इस बंदरगाह से निकले हैं, तब से पूरे सात साल तक एक बंदरगाह से दूसरी बंदरगाह तिजारत करते रहे हैं, हम ने इतना माल कमाया कि येह जहाज़ ख़ालिस सोने से भर गया है, इस के अ़लावा बहुत सा माल फ़ुलां फ़ुलां बंदरगाह में बत़ौरे अमानत रखा हुवा है।"

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

जब ताजिर ने येह सारी बातें सुनी, तो बहुत ख़ुश हुवा, और अपने दिल से कुफ़्रो शिर्क का ताला तोड़ दिया, उसे यक़ीन हो गया कि ह़ज़रते फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का दीन ही दीने ह़क़ है। क्यूंकि वोह ख़ुद अपने दिल की आंख से सब कुछ देख चुका था, इस लिए उस ने सोचा कि मेरे लिए बेहतर यही है कि मैं येह सारा माल ह़ज़रत फ़क़ीह महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में नज़्र कर दूं और आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर ईमान ले आऊँ।

(1) यानी: आ कर रुका।

सुब्ह को ताजिर अपने अहलो अ़याल और अपने सारे माल समेत ह़ज़रते फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, और आप के क़दमों में गिर कर अ़र्ज़ करने लगा:

"हुज़ूर मेरे मख़दूम, मैं अपने तमाम माल व अहलो अ़याल के साथ आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि आप के दस्ते मुबारक पर इस्लाम ला कर आप के नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन में दाख़िल हो जाऊं। येह मेरा सारा माल आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर है, आप जिस त़रह़ चाहें तसर्रुफ़ फ़रमाएं।"

ह़ज़रते फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसे, उस के अहलो अ़याल और उस जहाज़ वालों को कलिमा ए इस्लाम पढ़ा कर, उन्हें मुसलमान किया और ताजिर से फ़रमाया: "येह सारा माल तुम्हारा है, इस में से अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करो और बाक़ी ख़ुद रखो और तिजारत करो, जैसा कि पहले किया करते थे, अल्लाह तआ़ला तुम से और तुम्हारे काम से राज़ी हो।"

وَهُوَاَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ، وَاَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

बिफ़ज़्लिही तआ़ला रिसाला ख़त्म हुवा

दुआ ए मुसन्निफ़

मेरे मौला ! तेरे ह़बीब मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से, ह़ज़रते मह़बूबे सुब्ह़ानी मुह़युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه , साह़िबे तज़किरा बुज़ुर्ग ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और जुम्ला औलिया ए किराम के वसीले से मुझे ईमाने कामिल की दौलत अ़ता फ़रमा दे, अपनी मह़ब्बत और अपने लिए ख़ुलूस में इज़ाफ़ा फ़रमा दे, अपनी त़ाअ़त व इ़बादत में रग़बत दिला दे।

मुझे अहले इ़ल्म व अ़मल और अहले ज़िक्र व शुग़्ल में कर दे।

मुझे नफ़्सो शैत़ान, झूट व रियाकारी, तकब्बुर व घमन्ड और धोका धड़ी के फ़ित्ने से बचा ले।

मुझे रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमा, तमाम आफ़ातो बलियात, ग़मों और परेशानीयों से नजात दे दे।

ऐ दुआएं क़बूल फ़रमाने वाले ! मेरे, मेरे वालिदैन के और कुल मोमिनीन व मोमिनात के गुनाहों को बख़्श दे।

मुझे अपने घर और अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दर की ज़ियारत नसीब फ़रमा।

मेरे मौला तेरा ही तो क़ौल है:

﴿ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ ﴾(١)

इलाहल आ़लमीन ! अपने इस ज़ईफ़ बन्दे की येह दुआ़एं क़बूल फ़रमा ले, इस की तमाम हाजतें पूरी फ़रमा दे।

(1) अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरतुल बक़रह 2, आयत नंबर: 186

तर्जमा: और जब आप से सुवाल करें मेरे बन्दे, मेरे ह़ाल के बारे में, पस बेशक मैं क़रीब हूँ, क़बूल करता हूं दुआ़ करने वालों की दुआ़ को, जब वोह मुझ से दुआ़ करें।

(मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

(ज़ेरे इन्तिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) से शाएअ़ होने वाली किताबें

92 सफ़हात पर मुश्तमिल उर्दू और अ़रबी ज़बान में, ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की ज़िन्दगी पर पहली किताब, बनाम: **“ज़मीरुल इन्सान”**

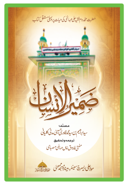

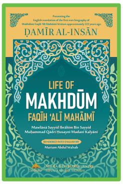

91 सफ़हात पर मुश्तमिल इंगलिश और अ़रबी ज़बान में, ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की ज़िन्दगी पर पहली किताब, बनाम: **“Life of Makhdūm Faqīh‘Alī Mahāimī”**

57 सफ़हात पर मुश्तमिल हिन्दी ज़बान में, ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की ज़िन्दगी पर पहली किताब, बनाम: **“ हयाते मख़दूमे महाइमी ”**

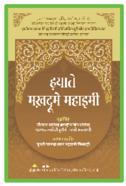

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

76 सफ़हात पर मुश्तमिल उर्दू और अ़रबी ज़बान में, ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की किताब, बनाम: **“शर्ह़ु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार”**

57 सफ़हात पर मुश्तमिल हिन्दी ज़बान में, ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की किताब, बनाम: **“शर्ह़ु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार”**

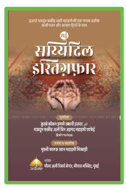

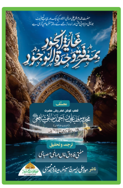

59 सफ़हात पर मुश्तमिल उर्दू और अ़रबी ज़बान में, ह़ज़रते फ़क़ीह अ़ली महाइमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की किताब, बनाम: **“ग़ायतुल जूद बि मारिफ़ति वह़दतिल वुजूद”**

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

के क़ियाम से पहले भी हमारी टीम, "अशरफ़ी लत़ीफ़ फ़ाउन्डेशन" के तह़त, मुन्दरिजा ज़ैल इ़ल्मी किताबों पर काम कर चुकी है:

➤ 490 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल हु़ज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ुत़बात का दिलकश मजमूआ़ बनाम: **"ख़ुत़बाते शैख़ुल हिन्द (जिल्द अव्वल)"**

➤ 432 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल हु़ज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मक़ालात का इ़ल्मी मजमूआ़ बनाम: **"अशरफ़ुल मज़ामीन"**

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

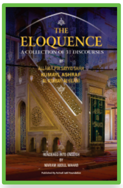

➤ 458 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल अंग्रेज़ी ज़बान में हु़ज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ुत़बात का दिलनशीन मजमूआ़ बनाम: **"The Eloquence Vol 1"**

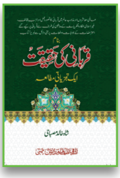

➤ 98 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, ग़ैर मुस्लिम की त़रफ़ से, क़ुरबानी पर होने वाले एतिराज़ात का इ़ल्मी मुह़ासबा, बनाम:

"क़ुरबानी की ह़क़ीक़त: एक तजज़ियाती मुत़ाला"

➤ 96 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की विलादत ख़ानए काबा में होने के सिलसिले में इ़ल्मी किताब, बनाम: **"मौलूदे काबा"**

आसताना ए मुक़द्दसा

क़ुतबे कोकन हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

مولیٰ علی ریسرچ سینٹر

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

का बुनियादी मक़्सद येह है कि दुनिया भर की लाइब्रेरियों से अस्लाफ़े किराम की ऐसी किताबें ह़ासिल की जाएं जो अब तक शाएअ़ नहीं हुईं या शाएअ़ तो हुईं मगर अब नायाब हो चुकी हैं उन किताबों पर फिर से जदीद अंदाज़ में काम किया जाए। अगर वोह किताबें अ़रबी या फ़ारसी ज़बान में हैं तो उर्दू, हिन्दी और इंग्लिश तीनों ज़बानों में उन का आसान तर्जमा भी किया जाए। अ़रबी और फ़ारसी इ़बारत की तह़क़ीक़ की जाए, मुश्किल किताबों को आसान किया जाए और उन की इशाअ़त करवा कर उन्हें दुनिया भर की लाइब्रेरियों, अहले इ़ल्म, मुह़क़्क़िक़ीन, स्कोलर्ज़ और अ़वाम तक पहुंचाया जाए।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

WWW.MINARAMASJID.COM